मूल्य : 20/-

पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974

वर्ष : ३

मई : २०१९, विक्रमी सम्वत् : २०७६
सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३१२०, दयानन्दाब्द : १९५

अंक : ११

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

सत्य और ज्ञान से भरपूर आर्यसमाज नोएडा का मासिक मुखपत्र

# विश्ववारा संस्कृति

## मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

"सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा"

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।।

ईश्वर का व्यापक ज्ञानस्वरूप पूज्य और सहज स्वभाव जानकर हम उसकी उपासना करें तथा जीवन में सदा सत्य का आचरण करें।

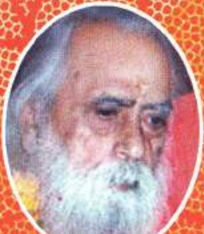

स्वामी दीक्षानन्द
स्मृति दिवस : 15 मई

वीर सावरकर
जन्म दिवस : 28 मई

श्यामजी कृष्ण वर्मा
पुण्य तिथि : 31 मई

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती
1824-1883 ईस्वी सन
1881-1940 विक्रमी सम्वत

आर्य समाज नोएडा के नवनिर्वाचित अधिकारी चुनाव अधिकारी डॉ. वीरपाल विद्यालंकार और प्रधानाचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार के साथ।

आर्य समाज नोएडा के नवनिर्वाचित महिला अधिकारी प्रधाना, मंत्रणी और कोषाध्यक्षा

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।।

# विश्ववारा संस्कृति

## मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

**संरक्षक**
श्री आनंद चौहान, श्री सुधीर सिंघल

**प्रधान**
श्री मनोहर लाल सरदाना

**प्रबंध संपादक**
आर्य कै. अशोक गुलाटी

**संपादक**
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

**सह संपादक**
आचार्य ओमकार शास्त्री

**प्रकाशक और मुद्रक**
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाऊस, सी-ब्लॉक, बारात घर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित एवं आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया।

**पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974**

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17
Date of Dispatch 12&13 Every Month

**मूल्य**

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक प्रति | : 20/- | वार्षिक | : 250/- |
| पांच वर्ष | : 1100/- | आजीवन | : 2500/- |

विदेश में वार्षिक शुल्क : 3100/-


# अनुक्रमणिका


| क्रम सं. | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|
| 1. | संपादकीय : परिवार रूपी संस्था... | 2 |
| 2. | सत्संग से परमानंद की प्राप्ति | 3 |
| 3. | स नो बन्धुर्जनिता... | 4-5 |
| 4. | मूर्धन्य संन्यासी एवं वैदिक... | 6-7 |
| 5. | ईश्वर की आज्ञा पालन... | 8-9 |
| 6. | अपराधिक प्रवृत्ति की वैदिक... | 10 |
| 7. | संघे शक्तिः कलि युगे | 11 |
| 8. | महापुरुषों को नमन... | 12-13 |
| 9. | आर्यसमाज का मुख्य कार्य... | 14-15 |
| 10. | पर्यावरण का वैदिक... | 17 |
| 11. | समाचार-सूचनाएं | 22-23 |
| 12. | सुस्वास्थ्य : भोजन न छोड़े... | 24 |


**पाठकवृंद** : कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए 'विश्ववारा संस्कृति' के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। आपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

**लेखकवृंद** से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।


**विज्ञापन दर**

| | | |
|---|---|---|
| पिछला कवर पृष्ठ | : | 5100 रुपये |
| कवर पृष्ठ नं.-2 | : | 3100 रुपये |
| कवर पृष्ठ नं.-3 | : | 2500 रुपये |
| पूरा पृष्ठ अंदर | : | 1000 रुपये |
| आधा पृष्ठ अंदर | : | 600 रुपये |


'विश्ववारा संस्कृति' में सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।


**संपादकीय कार्यालय**

आर्य समाज, बी-69,
सेक्टर-33, नोएडा- 201301
गौतमबुद्धनगर, (उ.प्र.)
दूरभाष : 0120-2505731,
9871798221, 7011279734

Web : www.noidaaryasamaj.org, E-mail : info.aryasamajnoida33@gmail.com

# संपादकीय...

## ।। ओ३म् ।।

# परिवार रूपी संस्था का ढहता ढांचा

**भारतीय** संस्कृति में परिवार का बहुत बड़ा महत्व है। हमारी वैदिक संस्कृति में परिवार की परिकल्पना बहुत ही गरिमापूर्ण है। वेद के अनुसार 'अनुव्रत पिता: पुत्रो माताभवत सम्मना जाये पत्ये मधुमती वाचं वदति शांतिवाम्।' दादा-दादी, माता-पिता, पति-पत्नी, पुत्र-पौत्रादि, भाई-बहन एक साथ रहें। किंतु इस आर्थिक कलियुग में परिवार बिखरते जा रहे हैं। माता-पिता बोझ बन गये हैं। आज का व्यक्ति व्यक्तियों से नहीं वस्तुओं से प्रेम करता है। आज का मानव धन प्रेम में बहुत उन्मत सा दिखाई पड़ता है। आजकल युवा दम्पति अपने वृद्ध माता-पिता को अलग रहने के लिए विवश करते हैं। सेवा का भाव इस पीढ़ी में न्यूनतम होता जाता है। आजकल की पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित लोग जैसे-तैसे खाना, वस्त्र आदि उपलब्ध कराने को ही अपना पूर्ण कर्तव्य पालन समझ लेते हैं। वे यह नहीं जानते सेवा के साथ सुश्रुषा भी अत्यंत आवश्यक है। उनके साथ वक्त बिताना, उनकी बातें सुनना, उनके साथ रहना शायद वस्त्रादि से ज्यादा आवश्यक है। जिस देश में मां का स्थान पृथ्वी से बड़ा, पिता का स्थान आकाश से ऊंचा बताया गया हो वहां वृद्धजनों की उपेक्षा देखकर कष्ट होता है। भाई के विषय में नीतिकार कहता है वसुंधरा मनोमूर्ति भाई अपनी मूर्ति की तरह से होता है। किंतु भाइयों का प्यार भी स्वार्थ वृत्ति की भेंट चढ़ जाता है। कई बार ऐसा भी देखने को मिलता है कि भाइयों के मुकदमों के चलते ही झगड़े होते हैं। राम भरत का प्रेम न होकर स्वार्थ सम्पति के वशीभूत एक-दूसरे के शत्रु बनकर रह जाते हैं। परिवार की नींव पति-पत्नी के रिश्ते पर टिकी होती है। उसमें प्रेम समर्पण एवं माधुर्य का अभाव सा हो गया है। झगड़े, तलाक की परिस्थितियां बढ़ती जा रहीं हैं, जिसके कारण परिवार में तनाव पसरा रहता है। उस तनाव के कारण ही बच्चे मानसिक रूप से विचलित तथा अस्थिर चित दिखाई पड़ते हैं। आज का युवा विषम परिस्थितियों से घिरा हुआ नशे का सहारा लेता है। नशेड़ियों के बच्चे अपराधिक पैदा होते हैं। विवाहेत्तर संबंधों की दुर्गंध के कारण पारिवारिक ढांचा ढह रहा है। इसको बचाने के लिए वैदिक परिवार की अवधारणा का प्रचार-प्रसार अत्यावश्यक है।

■ आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

आज का व्यक्ति व्यक्तियों से नहीं वस्तुओं से प्रेम करता है। आज का मानव धन प्रेम में बहुत उन्मत सा दिखाई पड़ता है। आजकल युवा दम्पति अपने वृद्ध माता-पिता को अलग रहने के लिए विवश करते हैं। सेवा का भाव इस पीढ़ी में न्यूनतम होता जाता है। आजकल की पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित लोग जैसे-तैसे खाना, वस्त्र आदि उपलब्ध कराने को ही अपना पूर्ण कर्तव्य पालन समझ लेते हैं। वे यह नहीं जानते सेवा के साथ सुश्रुषा भी अत्यंत आवश्यक है। उनके साथ वक्त बिताना, उनकी बातें सुनना, उनके साथ रहना शायद वस्त्रादि से ज्यादा आवश्यक है। जिस देश में मां का स्थान पृथ्वी से बड़ा, पिता का स्थान आकाश से ऊंचा बताया गया हो वहां वृद्धजनों की उपेक्षा देखकर कष्ट होता है। भाई के विषय में नीतिकार कहता है वसुंधरा मनोमूर्ति भाई अपनी मूर्ति की तरह से होता है। कितु भाइयों का प्यार भी स्वार्थ वृत्ति की भेंट चढ़ जाता है। कई बार ऐसा भी देखने को मिलता है कि भाइयों के मुकदमों के चलते ही झगड़े होते हैं। राम भरत का प्रेम न होकर स्वार्थ सम्पति के वशीभूत एक-दूसरे के शत्रु बनकर रह जाते हैं।

# सत्संग से परमानंद की प्राप्ति

आर्य कै. अशोक गुलाटी
प्रबंध संपादक

सत्संग का अर्थ है- अच्छे लोगों का सानिध्य जहां प्राप्त हो उसे सत्संग कहते हैं। सत्संग से ही मनुष्य आत्मिक उन्नति कर सकता है। यदि मनुष्य जीवन में परमआनंद को प्राप्त करना चाहता है तो उसे सत्संग में जाना ही पड़ेगा क्योंकि महान लोगों के मुख से निकले वाक्य हमारे जीवन को श्रेष्ठ बना सकते हैं। हमारे मन में उत्पन्न हुए विकार तभी मिट सकते हैं जब हम सत्संग करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रवचन को सुनकर मुंशीराम एक संत स्वामी श्रद्धनन्द बने। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने समाज के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान दिया। ये सब सत्संग का ही प्रभाव था। सत्संग से हमारे विचार और मन पवित्र हो जाता है। जिससे मनुष्य का जीवन महान और श्रेष्ठ बन जाता है। अनेकों उदाहरण ऐसे मिलते हैं कि सत्संग के कारण ही सामान्य मनुष्य उच्च कोटि के विद्वान, संन्यासी और वक्ता बन गये। अमीचन्द स्वामी दयानन्द के सत्संग से भक्त अमीचन्द बन गये।

सत्संग से आत्मिक कल्याण होता है। यदि यही हमारा साध्य बन जाए तो परमानन्द परमात्मा का साक्षात्कार सम्भव है। सत् का संग ही सत्संग है। जैसा संग वैसा रंग- जो मानव संत, तपस्वी, चोर या किसी और की सेवा या संग करता है वह वैसा ही हो जाता है। अतः संग विचार पूर्वक करना चाहिए। सत्संग की बड़ी महिमा है। सत्संग के हमारे जीवन में आ जाने से हम अनेक बुराईयों से बच सकते हैं। सत्संग से अंत:करण की शुद्धि होती है। जैसे सूर्योदय सम्पूर्ण जगत को अपने प्रकाश से आलोकित कर देता है वैसे ही सत्संग अंत:करण को अंधकार से अलग कर देता है। सत्संग की प्यास बढ़ती जाए इसके लिए हमें प्रयास करना चाहिए व अपने जीवन को सफल बनाना चाहिए।

सत्संग का प्रभाव : हर एक धर्म मे सत्संग का बहुत बड़ा महत्व है, हर कोई धर्मग्रंथ का पठन, पाठन या ज्ञानी का संग करके मूल्य-मर्म को समझते है। कहावत है, 'जैसा संग वैसा रंग।' संत यानि शुभ, सत्य की ओर एक कदम। जिहोंने सततत्व को पाया है, खोजा है, समझा है, उनका जीवन सत का पर्याय है। जिनका रहन-सहन, आचार-विचार शुद्ध, स्वार्थहीन, परोपकारी, जनहित मे समर्पित है, उनको हमारे जीवन में स्थान देना है।

सत्संग से दुर्गुणों का नाश और सदगुणों की वृद्धि होती है। तन, मन, स्वस्थ प्रफुल्लित रहता है। कभी कोई मुश्किल की घड़ी मे उनके (अपने श्रद्धेय के) वचन याद आ गए और हमे हौसला मिल जाता है, गलत काम करने से अटक जाते है, हमारे अंदर में भी दया, नम्रता, करुणा, परोपकारिता जैसे आत्मिक सदगुणों की वृद्धि होती है। सत्य की ओर बढ़ाया हुआ एक कदम असत्य से कोसों दूर ले जाता है। महान है हमारे संत, गुरु और ज्ञानी लोग जो हमारे दुर्गुणों को अपने प्रेम से सदगुणों मे परिवर्तित कर देते है और सत्यमार्ग के राहबर बन जाते है। यही है सद्गुणी के सत्संग का प्रभाव!

सत्संग से आत्मिक कल्याण होता है। यदि यही हमारा साध्य बन जाए तो परमानन्द परमात्मा का साक्षात्कार सम्भव है। सत् का संग ही सत्संग है। जैसा संग वैसा रंग- जो मानव संत, तपस्वी, चोर या किसी और की सेवा या संग करता है वह वैसा ही हो जाता है। अतः संग विचार पूर्वक करना चाहिए। सत्संग की बड़ी महिमा है। सत्संग के हमारे जीवन में आ जाने से हम अनेक बुराईयों से बच सकते हैं। सत्संग से अंतःकरण की शुद्धि होती है। जैसे सूर्योदय सम्पूर्ण जगत को अपने प्रकाश से आलोकित कर देता है वैसे ही सत्संग अंतःकरण को अंधकार से अलग कर देता है। सत्संग की प्यास बढ़ती जाए इसके लिए हमें प्रयास करना चाहिए व अपने जीवन को सफल बनाना चाहिए।

**इस नश्वर शरीर से प्रेम करने के बजाय हमें परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए, सत्य और धर्म, से प्रेम करना चाहिए क्योंकि ये नश्वर नहीं हैं।**

# स नो बन्धुर्जनिता

इस अंक से ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना के सातवें मंत्र की व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है, मनन चिन्तन कर जीवन सफल करें।

- प्रबंध संपादक

(गतांक से आगे...)

**स्व. प्रो. उमाकान्त उपाध्याय**

हमारा मस्तिष्क, हृदय-फेफड़े, गुर्दे, किडनी आदि सभी अंग प्रत्यंग माता-पिता से प्राप्त होते हैं। हम ऋणी होते हैं अपने जनक-जननी के, हमारे शरीर रंग-रूप, अंग-प्रत्यंग के लिए- जात कर्म संस्कार में पिता बच्चे को आशर्वाद देते हुए कहता है-'**अङ्गादङ्गात् संस्रवसि हृदयादधिजायसे। प्राण ते प्राणेन संदधामि, जीव से यावदायुषम्॥ अंगादंगात् संभवसि हृदयादधि जायसे। वेदो वै पुत्रनामासि सं जीव शरदः शतम्॥**'

मंत्र ब्रा. 1-5-16

पिता शिशु को आशीर्वाद देता हुआ कहता है, 'मेरे लाल! तू मेरे अंग-अंग से निकलकर आया है, तू मेरे हृदय से निकला है, तू मेरे प्राण का अंश है। बेटे, सैकड़ों वर्ष जीओ, मेरी भी आयु लेकर जीओ।

जीव अपने सूक्ष्म और कारण शरीर के साथ यमालय (वायुमंडल) में चक्कर काटता, साग-पात, हवा-पानी, किसी भी माध्यम से पिता के शरीर में पहुंचता है, शुक्रकीट का रूप लेकर पुनर्जन्म, अगले जन्म की यात्रा करता है। शुक्रकीट क्या है? अगले जन्म से शरीर का बीज है। कितने संस्कार, यात्रा की कितनी प्रगति, पिता के शरीर में हुई, प्रभु की व्यवस्था, वही जाने। कितने दिन पिता के शरीर का अंग बना रहा यह भी निश्चित नहीं। माता के गर्भ में लगभग 280 दिन की अवधि बताई जाती है। पिता के शरीर में जीव के रहने की कोई निश्चित अवधि नहीं है। हां, यह तो होता है कि पिता जितने अधिक दिन शुक्र की रक्षा कर लेता है, स्खलन से बचा रहता है, बीज उतना ही अधिक बलवान होता है। अगला शरीर उतना ही अधिक बलवान और निरोग होता है।

हम जनिता, जनयिता, परमेश्वर की भूमिका का आंकलन करने का प्रयास कर रहे हैं। पिता की विशेषताओं को, शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक संस्कारों को, कई प्रकार की उपलब्धियों को, शुक्रकीट के रूप में लेकर यह प्राणी माता के गर्भ (डिम्ब) में प्रवेश करता है। यहां प्राणी के स्थूल शरीर का विकास निर्माण चालू हो जाता है। हाथ, पैर, हड्डी, मांस से आरम्भ करके, महाजटिल, जटिलतम मस्तिष्क संयंत्र, स्नायु मं ्ल शरीर-मन-बुद्धि-अध्यात्म सबका सामंजस्य, सब प्रभु के जनिता रूप में उजागर करते हैं। हम तो एक पंक्ति में गा देते हैं- '**तूने हमें उत्पन्न किया, पालन कर रहा है तू। तुझसे ही पाते प्राण हम, दुखियों के दुःख हरता है तू॥**'

हम प्रार्थना करते हैं- '**पुनर्मनः पुनरायुर्म आगन्, पुनः प्राणः पुनरात्मा आगन्, पुनश्चः, पुनःश्रोत्रंम आगन्॥**'

युज.- 4-15

हे प्रभो! पुनर्जन्म में आप हमें आयु, प्राण, मन, अन्त:करण, चक्षु, ज्ञानेन्द्रियां, कर्मेंद्रियां सभी प्राप्त कराइए। आयु-प्राण-अंत:करण ज्ञानेन्द्रियां, कर्मेंद्रियां, इनकी प्राप्ति में माता-पिता का निमित्तमात्र सहयोग होता है। इनके वास्तविक दाता, जनयिता तो जगदीश्वर ही है। प्रभु ये सब साधन उपकरण हमारे कर्मों के फलस्वरूप हमें प्राप्त कराते हैं। फिर

पिता शिशु को आशीर्वाद देता हुआ कहता है, 'मेरे लाल! तू मेरे अंग-अंग से निकलकर आया है, तू मेरे हृदय से निकला है, तू मेरे प्राण का अंश है। बेटे, सैकड़ों वर्ष जीओ, मेरी भी आयु लेकर जीओ। जीव अपने सूक्ष्म और कारण शरीर के साथ यमालय (वायुमंडल) में चक्कर काटता, साग-पात, हवा-पानी, किसी भी माध्यम से पिता के शरीर में पहुंचता है, शुक्रकीट का रूप लेकर पुनर्जन्म, अगले जन्म की यात्रा करता है। शुक्रकीट क्या है? अगले जन्म से शरीर का बीज है। कितने संस्कार, यात्रा की कितनी प्रगति, पिता के शरीर में हुई, प्रभु की व्यवस्था, वही जाने। कितने दिन पिता के शरीर का अंग बना रहा यह भी निश्चित नहीं। माता के गर्भ में लगभग 280 दिन की अवधि बताई जाती है। पिता के शरीर में जीव के रहने की कोई निश्चित अवधि नहीं है। हां, यह तो होता है कि पिता जितने अधिक दिन शुक्र की रक्षा कर लेता है, स्खलन से बचा रहता है, बीज उतना ही अधिक बलवान होता है। अगला शरीर उतना ही अधिक बलवान और निरोग होता है। हम जनिता, जनयिता, परमेश्वर की भूमिका का आंकलन करने का प्रयास कर रहे हैं। पिता की विशेषताओं को, शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक संस्कारों को, कई प्रकार की उपलब्धियों को, शुक्रकीट के रूप में लेकर यह प्राणी माता के गर्भ में प्रवेश करता है।

यह तो हमारे जन्म-जन्मांतरों का लेखा-जोखा है। कितनी बार जीवन-मरण का चक्र चल चुका है, कितनी बार और चलेगा-

**मृतश्चाहं पुनर्जातो जातश्चाहं पुनर्मृतः। नानायोनिसहस्राणि मयोषितानि यानि वै। आहारा विविधा भुक्ताः पीता नानाविधाः स्तनाः। मतरो दृष्टाः पितरः सुहृदस्तथा॥**

निरु. 13-19

मैं मरकर पैदा हुआ, पैदा होकर पुनः मरा। मैंने सहस्रों योनियां प्राप्त की। जिस योनि में था उसके आहार खाये, उन योनियों की माताओं का स्तन पिया। कितनी माताएं, कितने भाई बंधु मिले- बिछुड़े।

**पुनरपि जननं, पुनरपि मरणं, पुनरपि जननी जठरे शयनम्**

हमारे कर्मों के अनुसार, संस्कारों के अनुसार, हमारी प्रवृत्तियों के अनुसार दयालु जगदीश्वर हमें जन्म देते हैं। हमें प्रभु जन्माते हैं, वे हमारे जनयिता हैं, हमारे जनिता हैं।

**सः (परमेश्वरः) नः विधाता-** प्रभु हमारे विधानकर्ता हैं- 'सर्वोषां पदार्थानां कर्मफलानाश्च विधानकर्ता' जैसी करनी, वैसी भरती। हमारा प्रभु अंधेर नगरी का विधाता नहीं है। सारे कामों के फलों की व्यवस्था परमेश्वर के विधान में है। एक खेत में गेहूं लहलहा रहा है, दूसरे खेत में सरसों की बासंती साड़ी झूल रही है। कहीं आम का बाग है तो कहीं बबूलों की कटीली बबुराही। जैसे बीज बोये गये हैं, वैसे ही उपज भी सामने खड़ी है। तभी तो समझदारों ने कई प्रकार से समझाया है-

**जैसी करनी वैसी भरनी, आज करै, कल पावेगा। जो औरों को कल्पायेगा, वह कभी नहीं कलि पायेगा॥**

कल्पाना का अर्थ है-तड़पाना, कष्ट देना। कलिपाना का अर्थ है सुख पाना, आराम से रहना। मनुष्य अपने कर्मों के रूप में अपनी प्राप्ति का बीज बोता है। सत्कर्म का फल सुख सम्मान के रूप में और दुष्टकर्म, कुकर्मों का फल कष्ट और दुःख के रूप में मिलता है।

कर्मों के अनुसार फल देने की अपनी सुव्यवस्था है और वह अटल है। प्रभु अपने भक्तों का, नाम जपने वालों का, कीर्तन-भजन, स्तुति-उपासना करने वाले का पक्षपात नहीं करता, कोई रियायत नहीं करता। जैसे एक सच्चरित्र, सत्यनिष्ठ अध्यापक या परीक्षक विद्यार्थी या परीक्षार्थी का मूल्यांकन उसकी योग्यता, उत्तर पुस्तिका के अनुसार करता है, उसके प्रणाम या नम्रता के आधार पर उसे परीक्षा में अंक नहीं मिलेंगे, उसके प्राप्तांक उत्तरों के शुद्ध-अशुद्ध के अनुसार, उत्तरों के स्तर के अनुसार मिलेंगे। उसी प्रकार प्रभु के दरबार में कोई सिफारिश भी नहीं चलती-

**'उसके यहां न रिश्वत चलती, ना चलती मक्कारी। उसकी देखरेख और न्याय की नीति है, बड़ी निराली॥ धर्म का बेड़ा पार करे वह पापी की नाव डुबाता। मेरे दाता के दरबार में सब लोगों का खाता॥'**

कभी-कभी अधर्मी, अन्यायी की भी उन्नति देखी जाती है, लोग कहते हैं- 'भाई! उसको तो बेईमानी फलती है।' यह ठीक नहीं है, प्रभु हमारे कर्मों के विधाता हैं, बेईमान को बेइमानी का फल अवश्य ही मिलता है। मनु महाराज कहते हैं-

**'अधर्मेणैधतेतावत्ततो भद्राणि पश्यति। ततः सपत्नाञ्जयति, समूलश्च विनश्यति॥**

मनु. 4-14

स्वामी दयानन्द जी महाराज इसका अर्थ निम्न प्रकार प्रकार लिखते हैं- 'अधर्मात्मा मनुष्य धर्म की मर्यादा छोड़ (जैसे तालाब के बाध को तोड़कर जल चारों ओर फैल जाता है, वैसे) मिथ्या भाषण, कपट, पाखंड अर्थात् रक्षा करने वाले वेदों का खंडन और विश्वास-घातादि कर्मों से पराये पदार्थों को लेकर प्रथम बढ़ता है, पश्चात् धनादि ऐश्वर्य से खान-पान, वस्त्र, आभूषण, यान, स्थान, मान-प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है, अन्याय से शत्रुओं को भी जीतता है, पश्चात् शीघ्र नष्ट हो जाता है। जैसे जड़ काटा हुआ वृक्ष नष्ट हो जाता है, वैसे अधर्मी भी नष्ट हो जाता है।' -सत्या. चतुर्थ समु.

यह तो हुआ 'सर्वेषां पदार्थानां कर्म फलानां च विधानकर्ता' के ऊपर थोड़ा सा चिंतन। महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने 'विधाता' का अर्थ किया है- 'सब कामों का पूर्ण करने हारा।' इसका अभिप्राय यह है कि परमेश्वर की सहायता, कृपा, दया, करुणा के बिना हम अपने कामों को पूर्ण नहीं कर पाते हैं। प्रथम तो कृपा, दया, सहायता आदि पर विचार करते हैं। हमें जब दूकानदार से कोई वस्तु मिलती है, हम उस वस्तु का बाजार दर से मूल्य चुकाते हैं, तो इस क्रय-विक्रय में कोई करुणा, दया, कृपा आदि की बात नहीं होती। किंतु जब माता-पिता, गुरु-आचार्य से हम पालन-पोषण, विद्या-चरित्र प्राप्त करते हैं तो हम उसका मूल्य नहीं देते।

**(शेष अगले अंक में)**

○○


## सुधी पाठकों से आत्म निवेदन

**कृपया अपने विचारों से हमें अवश्य अवगत करावें ताकि पत्रिका को और सुरुचिपूर्ण बनाया जाए।**

■ प्रबंध संपादक : 9871798221, 7011279734

# मूर्धन्य संन्यासी एवं वैदिक सिद्धांतों के निष्ठावान प्रचारक स्वामी दीक्षानन्द जी

स्व. प्रो. डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया, डी. लिट.

**15 मई स्मृति दिवस पर विशेष**

आर्यजगत् के प्रतिष्ठित संन्यासी, प्रकाण्ड वैदिक विद्वान, मौलिक तत्ववेता, योग शिरोमणि, आदित्य ब्रह्मचारी, सर्वस्व त्यागी, आदर्श आचार्य, महर्षि दयानन्द के समर्पित सेनानी, वैदिक सिद्धांतों के निष्ठावान प्रचारक व स्वतंत्रता सेनानी, राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रबल समर्थक, गौरक्षा आंदोलन के पुरोधा, अध्यात्मचेता, देश-विदेश में आर्ष विचारधारा, वैदिक दर्शन एवं मानव-मूल्यों के प्रचारक प्रसारक स्वामी दीक्षानन्द जी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। समस्त प्रकार की ऐषणाओं से मुक्त, मुक्तिमार्ग के पथिक स्वामी दीक्षानन्द जी का आर्य समाज के मिशन को आगे बढ़ाने में अत्यधिक महत्वपूर्ण योगदान है। वे आर्यजगत् के उन कुछ विरले संन्यासियों में से एक थे, जो वेद-विद्या पारंगत थे, जिनकी कथनी-करनी एक थी तथा जिनका समस्त जीवन 'मनुर्भव' का दिव्य संदेश देने के लिए समर्पित था। लोकोपकार की भावना उनमें कूट-कूट पर भरी थी और वे सच्चे अर्थों में संन्यासी थे।

स्वामी दीक्षानन्द जी का जन्म 10 जून, 1918 को मध्यवर्गीय कायस्थ परिवार में हुआ था। उनका बचपन का नाम कृष्ण स्वरूप था। प्रारंभिक शिक्षा के उपरांत उन्होंने उपदेशक विद्यालय, लाहौर एवं गुरुकुल भटिंडा में एकाग्रचित होकर अध्ययन किया। बचपन से ही शिक्षण एवं अध्यात्म के प्रचार में उनकी रुचि थी। अध्ययन काल में उनके प्रमुख गुरु पं. बुद्धदेव विद्यालंकार थे, जो बाद में स्वामी समर्पणानन्द के नाम से विख्यात हुए। इनके प्रति स्वामी दीक्षानन्द जी के मन में समादर एवं श्रद्धा का भाव अंत तक बना रहा। अपनी शिक्षा सम्पन्न हो जाने के उपरांत कृष्ण स्वरूप जी ने उपदेशक विद्यालय भटिंडा की स्थापना की, जहां वे आचार्य कृष्ण के नाम से जाने जाते थे। संन्यासाश्रम में प्रविष्ट होने के पूर्व तक वे इसी नाम से ख्यात रहे। गुरुकुल प्रभात आश्रम, टिकरी, मेरठ में 1948 से 1956 तक उन्होंने आचार्य पद को सुशोभित किया। आचार्य कृष्ण ने 1975 में आर्यसमाज के शताब्दी समारोह में स्वामी सत्यप्रकाश जी से संन्यास की दीक्षा ली और वे स्वामी दीक्षानन्द के नाम से सुविख्यात हो गये।

वैदिक विषयों में शोध के प्रति स्वामी दीक्षानन्द जी की गहरी रुचि थी, अतः 1978 में अपने श्रद्धेय गुरु स्वामी समर्पणानन्द जी की स्मृति को अक्षुण्य रखने के लिए उनके नाम पर 'समर्पण शोध संस्थान' की स्थापना की। इस संस्थान के माध्यम से उन्होंने न केवल मौलिक अनुसंधान के लिए शोधार्थियों को प्रेरित किया, वरन् वैदिक साहित्य से जुड़े बहुत से स्तरीय ग्रंथों का प्रकाशन भी किया।

स्वामी दीक्षानन्द जी वाग्मी वक्ता ही नहीं, सिद्धहस्त लेखक भी थे। वे सच्चे अर्थों में तपस्वी थे। उनके ग्रंथों में उनके चिंतन की दीप्ति और विश्लेषण-क्षमता के दर्शन होते हैं। यों तो उनके ग्रंथों की संख्या बहुत बड़ी है, पर उनके कुछ प्रमुख ग्रंथ हैं- मृत्युंजय सर्वस्व, अग्निहोत्र सर्वस्व, उपनयन स्र्वस्व, ओंकार सर्वस्व, उपहार सर्वस्व, नाम सर्वस्व, दो पुटन के बीच, सत्यार्थ कल्पतरु, ए लविंग टोकन, वैदिक कर्मकाण्ड पद्धति, वाल्मीकि के पुरुषोत्तम राम, गुरुकुल शतकम्, सम्राट शतकम् आदि। उनका प्रचुर लेखन उनकी विद्वता, स्वाध्यायी प्रवृत्ति, श्रम-साधना गुरु-गंभीर विवेचन-विश्लेषण, विषय की अतल गहराईयों में पैठ एवं मौलिक चिंतन का साक्षी है। उनका तल स्पर्शी लेखन

**स्वामी दीक्षानन्द जी का जन्म 10 जून, 1918 को मध्यवर्गीय कायस्थ परिवार में हुआ था। उनका बचपन का नाम कृष्ण स्वरूप था। प्रारंभिक शिक्षा के उपरांत उन्होंने उपदेशक विद्यालय, लाहौर एवं गुरुकुल भटिंडा में एकाग्रचित होकर अध्ययन किया। बचपन से ही शिक्षण एवं अध्यात्म के प्रचार में उनकी रुचि थी। अध्ययन काल में उनके प्रमुख गुरु पं. बुद्धदेव विद्यालंकार थे, जो बाद में स्वामी समर्पणानन्द के नाम से विख्यात हुए। इनके प्रति स्वामी दीक्षानन्द जी के मन में समादर एवं श्रद्धा का भाव अंत तक बना रहा। अपनी शिक्षा सम्पन्न हो जाने के उपरांत कृष्ण स्वरूप जी ने उपदेशक विद्यालय भटिंडा की स्थापना की, जहां वे आचार्य कृष्णा के नाम से जाने जाते थे। संन्यासाश्रम में प्रविष्ट होने के पूर्व तक वे इसी नाम से ख्यात रहे। गुरुकुल प्रभात आश्रम, टिकरी, मेरठ में 1948 से 1956 तक उन्होंने आचार्य पद को सुशोभित किया।**

समाधिस्थ अवस्था में लिखा गया लगता है और उससे आर्ष साहित्य की निश्चय ही श्रीवृद्धि हुई है।

यद्यपि उनका समग्र लेखन तर्क-प्रमाण और वैज्ञानिक दृष्टि से ओतप्रोत है, तथापि उसे हृदयंगम करने में कोई कठिनाई नहीं होती। उनका लेखन पाठकों के लिए प्रेरक और दिशा-निर्देशक है। उनके शस्त्रानुमोदित मंतव्यों-उपदेशों पर आचरण कर कोई भी पाठक या साधक प्रेय से श्रेय एवं अन्नमय कोश से आनंदमय कोश की ओर प्रस्थान कर सकता है।

स्वामी दीक्षानन्द जी ने बहुत से ग्रंथों का सम्पादन-प्रकाशन कर मां भारती के भंडार को भरा तथा जन-जन तक वैदिक मान्यताओं को पहुंचाने का भरसक प्रयास किया। 'समर्पण शोध संस्थान' से उनके द्वारा प्रकाशित कुछ ग्रंथों के नाम हैं- वैदिक उपदेश माला, पाणिनीय प्रवेशिका, ऋग्वेद मंडल-मणि-सूत्र, यजुर्वेद-अर्थर्वेद-भाष्यम, समाज का कायाकल्प, श्रुति सौरभ, वेदों का यथार्थ स्वरूप, वैदिक दर्शन वैदिक स्वर्ग, अनादि तत्व, योगेश्वर कृष्ण Glimpses of Dayanad, works of Pt. Gurru Datta, vision of truth, Anthology of Vedic Hymns आदि। कहने की आवश्यकता नहीं कि इन ग्रंथों के स्वाध्याय से कोई भी व्यक्ति आर्ष सिद्धांतों से परिचय प्राप्त कर सकता है। आचरणविहीन कोरा ज्ञान तो किसी काम का नहीं। ऐसे विद्वान को तो वेद भी पवित्र नहीं कर सकते आचारहीनम् न पुनन्ति वेदाः।

**स्वामी दीक्षानन्द जी तलस्पर्शी विद्वान एवं तत्वदर्शी ऋषि थे। आर्य समाज एवं आर्ष सिद्धांतों के प्रति वे सर्वात्मना समर्पित थे। सत्य सनातन वैदिक सिद्धांतों को वे जन-जन तक पहुंचाना चाहते थे। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार की उनमें ललक थी। 'कृण्वंतो विश्वमार्यम्' के स्वप्न को वे साकार करना चाहते थे। अतः देश-विदेश में उन्होंने प्राण-पण से वैदिक दर्शन, आर्य समाज की मान्यताओं एवं मानव-मूल्यों का प्रचार-प्रसार किया। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने मॉरीशस, दक्षिण अफ्रीका, डरबन, नैरोबी, केन्या, पूर्वी अफ्रीका आदि देशों में वेद प्रचार का महत्वपूर्ण कार्य किया। अपने ज्ञानवर्द्धक, शास्त्र-सम्मत, वेदानुकूल, प्रभावपूर्ण प्रवचनों से उन्होंने असंख्य लोगों के जीवन का निर्माण किया, उन्हें यज्ञ संस्कृति से जोड़ा, आत्मोन्मुख किया तथा दुर्गुणों का परित्याग कर सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।**

स्वामी दीक्षानन्द जी तलस्पर्शी विद्वान एवं तत्वदर्शी ऋषि थे। आर्य समाज एवं आर्ष सिद्धांतों के प्रति वे सर्वात्मना समर्पित थे। सत्य सनातन वैदिक सिद्धांतों को वे जन-जन तक पहुंचाना चाहते थे। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार की उनमें ललक थी। 'कृण्वंतो विश्वमार्यम्' के स्वप्न को वे साकार करना चाहते थे। अतः देश-विदेश में उन्होंने प्राण-पण से वैदिक दर्शन, आर्य समाज की मान्यताओं एवं मानव-मूल्यों का प्रचार-प्रसार किया। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने मॉरीशस, दक्षिण अफ्रीका, डरबन, नैरोबी, केन्या, पूर्वी अफ्रीका आदि देशों में वेद प्रचार का महत्वपूर्ण कार्य किया।

अपने ज्ञानवर्द्धक, शास्त्र-सम्मत, वेदानुकूल, प्रभावपूर्ण प्रवचनों से उन्होंने असंख्य लोगों के जीवन का निर्माण किया, उन्हें यज्ञ संस्कृति से जोड़ा, आत्मोन्मुख किया तथा दुर्गुणों का परित्याग कर सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूं कि मुझे स्वामी दीक्षानन्द जी के प्रेरक प्रवचन सुनने के अनेक अवसर मिले- आर्य समाज, बी-2 ब्लॉक, जनकपुरी एवं अन्य आर्य समाजों में भी। किसी भी ख्यात व्यक्ति के समान स्वामी दीक्षानन्द जी के विषय में यह मिथ्या प्रवाद फैला रखा था कि वे स्वामी दीक्षानन्द नहीं, स्वामी दक्षिणानन्द हैं। अपने अनुभव के आधार पर मैं यह कह सकता हूं कि यह उनके विषय में मिथ्या और भ्रामक प्रचार था। जिन वर्षों में मैं आर्यसमाज, जनकपुरी का प्रधान था, मैंने कई बार उनसे यहां प्रवचन के लिए आग्रह किया और मुझे सदैव उनका आशीर्वाद मिला। मैंने लिफाफे में रखकर जो भी दक्षिणा उन्हें सादर भेंट की, उन्होंने सहर्ष स्वीकार की और कभी कोई ननु-नच नहीं की। स्वामी दीक्षानन्द जी की अग्निहोत्र में गहरी निष्ठा थी। वे यज्ञानुष्ठान को विधि-विधान और श्रद्धा के साथ करने के पक्षधर थे। वे यज्ञ की प्रक्रिया और याज्ञिक विश्लेषण में बहुत दक्ष थे। यज्ञाग्नि को बार-बार चिमटे से छेड़ने के वे विरोधी थे। उनका कहना था कि यज्ञाग्नि को सहज-स्वभाविक रूप मे प्रज्वलित होने दीजिए और जब तक बहुत विवशता न हो, उसके साथ छेड़छाड़ न कीजिए। स्वामी दीक्षानन्द जी अग्नि के समान तेजस्वी और सर्वत्यागी प्रवृत्ति के संन्यासी थे। भारत के महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने उन्हें 'योग शिरोमणि' की उपाधि से विभूषित किया था। आर्ष गुरुकुल नोएडा के उद्घाटन पर हमें उनका आशीर्वाद प्राप्त हुआ था व उनका आखिरी उद्बोधन भी इसी आर्यसमाज, गुरुकुल में हुआ था। OO

# ईश्वर की आज्ञा पालन व उसकी प्राप्ति ही मनुष्य जीवन का लक्ष्य

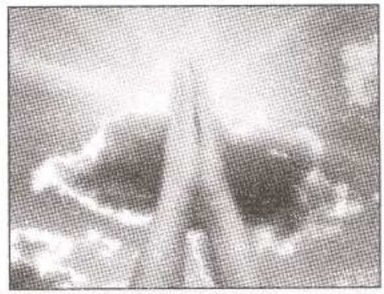

**मनमोहन कुमार आर्य**
**देहरादून, उत्तराखंड**

मनुष्य योनि सभी प्राणी-योनियों में सर्वश्रेष्ठ है। इसका कारण यह है कि मनुष्य को परमात्मा ने बुद्धि व हाथ आदि अंग देने के साथ शरीर की रचना इस प्रकार की है जिससे वह प्राय: स्व-इच्छित सभी कार्यों को कर सकता है। मनुष्य जो कार्य कर सकता है वह अन्य प्राणी योनियों के शरीरधारी नहीं कर सकते। यह मनुष्य योनि व अन्य योनियों में अन्तर है। पशु आदि प्राणी मनुष्य की भांति बोल नहीं सकते, अपनी व्यथा नहीं बता सकते और न ही अपनी सुख सुविधाओं के अनुसार अपने लिये घर, वस्त्र एवं भोजन ही प्राप्त कर सकते हैं।

परमात्मा ने हमें मनुष्य योनि इस लिये दी है जिससे कि हम अच्छे, श्रेष्ठ, वेदानुकूल, पुण्य व परोपकार के कर्म करें। पहले भी हमने इसी प्रकार के कुछ व अधिकांश कार्य किये थे जिस कारण हमें इस जन्म में मनुष्य का शरीर व माता-पिता आदि मिले हैं। इस जन्म में हमारे जैसे कर्म होंगे उसी के अनुरूप ही हमारा अगला जन्म होगा।

यदि हमने लोभ व सुख सुविधाओं का ही वरण किया और वेदानुकूल परोपकार सहित ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना व यज्ञादि कर्म नहीं किये तो हमारा अगला जन्म जरुरी नहीं की मनुष्य का होगा। यह पूरी सम्भावना है कि वेद विहित कर्म न करने पर हमारा व आपका जन्म अनेक व असंख्य पशु व पक्षियों में से किसी एक योनि में भी हो सकता है।

एक स्वाभाविक प्रश्न यह होता है कि हम ईश्वर की उपासना क्यों करें? हम अपने वर्तमान जीवन में जिससे कोई लाभ व सुविधा प्राप्त करते हैं तो उसे धन्यवाद करते हैं। जब हम छोटी-छोटी सेवाओं व कार्यों के लिये दूसरों का धन्यवाद कर सकते हैं तो जिस परमात्मा ने हमें यह मानव शरीर जिसका एक अंग भी करोड़ों रुपये व्यय कर कोई देने को तैयार नहीं होता, वह हमें परमात्मा से बिना कुछ भुगतान किये मिला है। न केवल मानव शरीर ही मिला अपितु हमारे माता-पिता, भाई-बहिन, दादी-दादा, नानी व नाना एवं अन्य परिवारजन जो हमें स्नेह देते हैं, ममता करते हैं, हमारा पोषण करने सहित हमें सुख देते हैं, वह सब परमात्मा द्वारा प्रदान किये गये हैं।

हमारे शरीर में ज्ञान व कर्म करने की जो शक्ति है, उसे देने में भी परमात्मा का ही योगदान व कृपा है। अत: सब मनुष्य व प्राणी ईश्वर के आभारी व ऋणी है। ईश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता का ज्ञापन ईश्वर के प्रति सच्चे भावों से उसका धन्यवाद व प्रेम भावना का प्रकाश कर ही किया जा सकता है। ईश्वर अपनी उपासना करने के लिये किसी को बाध्य नहीं करता। हम जब किसी से उपकृत होते हैं तो वह हमें यह नहीं कहते कि हमारा धन्यवाद करो, हम स्वयं ही उनका

परमात्मा ने हमें मनुष्य योनि इस लिये दी है जिससे कि हम अच्छे, श्रेष्ठ, वेदानुकूल, पुण्य व परोपकार के कर्म करें। पहले भी हमने इसी प्रकार के कुछ व अधिकांश कार्य किये थे जिस कारण हमें इस जन्म में मनुष्य का शरीर व माता-पिता आदि मिले हैं। इस जन्म में हमारे जैसे कर्म होंगे उसी के अनुरूप ही हमारा अगला जन्म होगा। यदि हमने लोभ व सुख सुविधाओं का ही वरण किया और वेदानुकूल परोपकार सहित ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना व यज्ञादि कर्म नही किये तो हमारा अगला जन्म जरुरी नहीं की मनुष्य का होगा। यह पूरी सम्भावना है कि वेद विहित कर्म न करने पर हमारा व आपका जन्म अनेक व असंख्य पशु व पक्षियों में से किसी एक योनि में भी हो सकता है। एक स्वाभाविक प्रश्न यह होता है कि हम ईश्वर की उपासना क्यों करें? हम अपने वर्तमान जीवन में जिससे कोई लाभ व सुविधा प्राप्त करते हैं तो उसे धन्यवाद करते हैं। जब हम छोटी-छोटी सेवाओं व कार्यों के लिये दूसरों का धन्यवाद कर सकते हैं तो जिस परमात्मा ने हमें यह मानव शरीर जिसका एक अंग भी करोड़ों रुपये व्यय कर कोई देने को तैयार नहीं होता, वह हमें बिना कुछ भुगतान किये मिला है।

धन्यवाद करते हैं क्योंकि ऐसा करना उचित होता है। अतः परमात्मा को जानना, उसके गुणों का वर्णन करना, चिन्तन व मनन करना, उसके अनुरूप स्वयं को बनाना, कोई असत्य व दूसरों के अहित का काम न करना, दूसरों को सुख देना, परिश्रमी जीवन व्यतीत करना व दूसरों को ज्ञान देना व सत्य मार्ग दिखाना मनुष्य के कर्तव्य हैं। ऐसा करने से ही ईश्वर का धन्यवाद होता है व ईश्वर हम पर सुख की वर्षा करते हैं। जो मनुष्य यह कार्य करता है वह समाज में यश व कीर्ति को प्राप्त होता है। महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज जी, स्वामी दर्शनानन्द जी आदि हमारे आदर्श हैं। हम इन ईश्वरभक्त व वेदभक्त महात्माओं व महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को उनके जैसा बना सकते हैं। हमें उनके जैसा बनना ही हमारे जीवन की सार्थकता है।

ईश्वर को जानने के लिये वेद व वैदिक साहित्य का अध्ययन व स्वाध्याय भी आवश्यक है। ऋषि दयानन्द ने ईश्वर का सत्य ज्ञान कराना बहुत आसान बना दिया है। इसके लिये हमें सत्यार्थप्रकाश, आर्याभिविनय, स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश, आर्योद्देश्य-रत्नमाला, आर्यसमाज के नियम आदि ग्रन्थों को पढ़ना है। प्रतिदिन एक घंटा भी यदि हम स्वाध्याय करें तो इन ग्रन्थों को पढ़ सकते हैं और सभी आध्यात्मिक, सामाजिक व देश के शासन के संचालन व्यवस्था का ज्ञान व अन्य बहुत कुछ जान व प्राप्त कर सकते हैं। इससे ईश्वर के स्वरूप, गुण, कर्म व स्वभाव सहित उपासना करने की विधि का भी ज्ञान प्राप्त होने सहित उपासना करने की प्रेरणा मिलती है। अतः हमें स्वाध्याय की रुचि बनानी चाहिये और प्रतिदिन न्यूनतम एक घंटा ईश्वरोपासना, अग्निहोत्र-यज्ञ आदि कर्म सहित एक घण्टा व अधिक समय तक स्वाध्याय अवश्य करना चाहिये। ऐसा करके आप भविष्य के वैदिक विद्वान बन सकते हैं, आपके समस्त सन्देह दूर हो सकते हैं, इसके किंचित सन्देह नहीं है।

यदि हम वेद व वैदिक साहित्य का अध्ययन करने के साथ ईश्वर की उपासना करेंगे तो हमारे सभी दुःख व कष्ट दूर हो जायेगें। हमारा यह जीवन तो सुखी व सम्पन्न होगा ही, हम निरोग व दीर्घायु होंगे और इसके साथ ही हमारा अगला जन्म भी सुधरेगा। अनुमान प्रमाण से यह कहा जा सकता है कि हमारा अगला जन्म व बाद के जन्म भी सर्वश्रेष्ठ मनुष्य योनि में ही प्राप्त होंगे। इतना अधिक लाभ जिस कार्य को करने से हमें होगा, जो लोग उसे नहीं करते व करने को सहमत नहीं होते उन्हें मूर्ख व महामूर्ख ही कहा जा सकता है। यदि हम भी नहीं करते तो हम भी ईश्वर के प्रति कृतघ्न और महामूर्ख ही सिद्ध होते हैं। अतः हमें ईश्वर के अस्तित्व व स्वरूप सहित अपनी आत्मा के स्वरूप, अपने अतीत व भविष्य के जन्मों व सुख-दुःख एवं हानि लाभ पर विचार करना चाहिये। ऐसा करने से हम बाद में पछतायेंगे नहीं और हमारी मृत्यु व जीवन भी सुखों से पूरित होगें। यह अनुभूति वेदाध्ययन व अनुशीलन से ज्ञात होती है।

वेद ईश्वर प्रदत्त सत्य ज्ञान है। ऋषि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थों सत्यार्थप्रकाश और ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका आदि में इस बात को सत्य सिद्ध किया है। यही कारण था कि सृष्टि के आरम्भ से महाभारतकाल तक के 1.96 अरब वर्षों से अधिक समय तक पूरे संसार में वैदिक धर्म और संस्कृति का ही प्रचार व प्रचलन था। आज जो विधर्मी हैं इन सबके पूर्वज वेदों का अध्ययन व आचरण करते थे और ईश्वर व वेद के भक्त थे। अब अविद्या के कारण वह वेदों व ईश्वर के सच्चे स्वरूप से दूर हो गये हैं। स्वामी दयानन्द जी ने अपने अपूर्व पुरुषार्थ, ब्रह्मचर्य व योग आदि की शक्तियों से हमें वेदों का ज्ञान सुलभ करा दिया है। हम ऋषि दयानन्द जी के आभारी हैं।

ओ३म्!! ○○

# प्रेरक विचार

- विपत्ति यथार्थ में विपत्ति नहीं। सम्पत्ति यथार्थ में सम्पत्ति नहीं। भगवान का विस्मरण होना ही विपत्ति है और उसका स्मरण बना रहना ही सबसे बड़ी सम्पत्ति है।
- नित्य धर्म का संचय करते चले जाओ, धर्म की सहायता से बड़े से बड़े दुस्तर दुःख से जीव तर जाता है।
- जो मिथ्या भाषण करता है वह सब चोरी आदि पापों के करने वाला है।
- यज्ञ से शेष बचे हुए अन्न को खाने वाले श्रेष्ठ पुरुष सब पापों से छूटते हैं और जो पापी लोग अपने शरीर पोषण के लिए पकाते हैं वह पाप को ही खाते हैं।

# अपराधिक प्रवृत्ति की वैदिक निवृत्ति

**ओमकार शास्त्री**
संस्कृत प्रवक्ता, आर्ष गुरुकुल, नोएडा

**मनुष्य को अपनी अपराधिक प्रवृत्ति को बदलने के वैदिक मार्ग को अपनाना पड़ेगा। वैदिक सिद्धांतों को स्वीकार करना पड़ेगा तथा वेद में बताये गये मनुष्य जीवन को श्रेष्ठ बनाने वाले रास्तों को अपनाना पड़ेगा। मनुष्य को अपनी प्रवृत्ति बदलने के लिए ब्रह्म यज्ञ, दैनिक अग्निहोत्र तथा आध्यात्मिक साहित्य का अध्ययन और चितन करना अत्यावश्यक है। चारों वेद में मनुष्य की हर प्रकार की उन्नति की बात की गई है और मनुष्य जीवन को सदाचारी बनाने की बात कही गई है। सदाचारी मनुष्य ही अपनी प्रवृत्ति को बदल सकता है क्योंकि उसे यह पता चल जाता है कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है।**

हमारे मन में जो विचार उत्पन्न होते हैं उनसे हमारी कार्यशैली बनती है और हम उसी अनुसार अपने कार्यों को करते हैं। हमारे मन में जो विचार उत्पन्न होते हैं वे हमारे मन वृत्ति के आधार पर हमारी मनोवृत्ति होती है वैसी ही हमारी प्रवृत्ति बन जाती है। मनोवृत्ति हमारे वातावरण और संगति के आधार पर बनती है। इसलिए कहा जाता है- 'सत्संगति कथय किं न करोति पुंसाम्' अर्थात् संगति व्यक्ति के विचार, मन और बुद्धि तथा कार्यशैली उत्पन्न हो जाती है।

जो लोग दुर्व्यसनों में फंसे हैं, चोरों की संगति करते हैं, जुआ खेलते हैं, मदिरापान करते हैं ये सब मनुष्य प्रवृत्ति को नष्ट-भ्रष्ट कर देता है और मनुष्य अपने रास्ते भटक जाता है तथा मनुष्य की प्राप्ति होती है। दुर्व्यसनों के कारण ही मनुष्य अपराधी बन जाता है और उसे अनेकों प्रकार के दण्ह दिये जाते हैं। मनुष्य को अपनी अपराधिक प्रवृत्ति को बदलने के वैदिक मार्ग को अपनाना पड़ेगा। वैदिक सिद्धांतों को स्वीकार करना पड़ेगा तथा वेद में बताये गये मनुष्य जीवन को श्रेष्ठ बनाने वाले रास्तों को अपनाना पड़ेगा।

मनुष्य को अपनी प्रवृत्ति बदलने के लिए ब्रह्म यज्ञ, दैनिक अग्निहोत्र तथा आध्यात्मिक साहित्य का अध्ययन और चिंतन करना अत्यावश्यक है। चारों वेद में मनुष्य की हर प्रकार की उन्नति की बात की गई है और मनुष्य जीवन को सदाचारी बनाने की बात कही गई है। सदाचारी मनुष्य ही अपनी प्रवृत्ति को बदल सकता है क्योंकि उसे यह पता चल जाता है कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है।

**अद्भिगात्राणि शुद्धयन्ति मनः सत्येन शुद्धयति।**
**विद्या तपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्धयति॥**

अर्थात् जल के द्वारा हमारा शरीर शुद्ध होता है, मन सत्य बोलने से पवित्र होता है। विद्या और त। से हमारी आत्मा पवित्र होती है, और ज्ञान से हमारी बुद्धि शुद्ध होती है। शरीर, मन, आत्मा और बुद्धि जब पवित्र हो जाती है तो हमारी प्रवृत्ति ठीक हो जाती है। इसलिए कहा गया है अपराधिक प्रवृत्ति की वैदिक अर्थात् वेद के द्वारा निवृत्ति की जा सकती है।

---

**ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।**

इस गायत्री महामंत्र में यह प्रार्थना की गई है कि हम पवित्र बनें। परमात्मन्! आप हमको अपनी ओर ले जाएं। बुद्धि को बल दें। चूंकि आप प्रेरणा देने और मार्ग दिखाने वाले हैं, वे सारी शक्तियां आपके अधीन हों और कभी आपकी आज्ञा के बाहर न हों, प्रत्युत वे आपके आदेश के अनुसार चलें।

⊙⊙⊙⊙

प्राणायाम करो, चित्त निर्मल होगा, इसको स्थिर रखने के लिए बार-बार प्रयत्न करो, यही अभ्यास है। चित्त की शुद्धता तथा परमात्मा के योग की तुलना में विषयों के सुख को तुच्छ समझो, यही वैराग्य है। इन दोनों साधनों से अपने भीतर बल ग्रहण करो तथा प्रभु की अनन्य भक्ति के अधिक योग्य बनो। इस प्रकार चित्त को रिक्त करके निर्मल परमात्मा का ध्यान करो, यही पूजन की विधि है।

⊙⊙⊙⊙

संध्या स्वयं एक शस्त्र है और बड़ा शस्त्र है। जैसे सूर्य की रश्मियों से रात्रि की सेनाएं स्वयं ही छिन्न-भिन्न हो जाती हैं, उसी प्रकार पाप के दल इस शस्त्र के सामने नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं। इन मंत्रों की अद्भुत शक्ति से, इनके अर्थों पर विचार करने से जीवन के आदर्श उच्च हो जाते हैं।

# संघे शक्तिः कलि युगे

**डॉ. शिव प्रसाद शर्मा**

**भारतीयैः** मनीषिभिः चतुर्षु युगेषु कालविभाजनं कृतम्। यत्तु कृतत्रेताद्वापर कलियुगानीतिः। तेष्वन्तिममिदं कलियुगं प्रवर्तते। अस्य कलेरागमनम् भागवतानुसारेण भगवतः कृष्णस्य स्वर्गारोहणदिन एवाभवत्। अस्मिन् युगे भागवतानुसारं लोके माया-तंद्रा-निद्रा-हिंसा-विषादानृत-शोकमोह-भयदैन्यानि प्रवर्धन्ते, यस्मात् सर्वे मनुष्याः क्षुद्रदृशः क्षुद्रभाग्याः, महाशनाः कामिनो वित्तहीनश्च भवन्ति। स्त्रियोऽपि स्वैरिण्यः, असत्या भवन्ति। जनपदानि दस्युभयाक्रान्तानि, वेदाः पाखण्डदूषिताः, प्रजापीडक एव राजा, शिश्नोदरपराः द्विजाश्च भवन्ति। किं बहुना, कलौ कलहवृत्तेः प्राधान्यं भवति। उक्तश्च भागवते-

**कलौ काकिणिकेऽप्यर्थे विगृह्य त्यक्तसौहृदाः।**
**त्यक्ष्यन्ति च प्रियान् प्राणान् हनिष्यन्ति स्वकामपि॥**
**न रक्षिष्यन्ति मनुजाः स्थविरौ पितरावपि।**
**पुत्रान् सर्वार्थकुशलं क्षुद्राः शिश्नोदरम्भराः॥**

एवंविधे कलियुगे कलहप्रवृद्धे समाजे लोक संस्थापनाय संहत्य महती आवश्यकता विद्यते। संहत्या दुष्करमपि कार्यसुकरम् भवति। संहतिप्रभावेणैव सहस्राब्दपरतंत्रा भारतवसुंधरा वैदेशिकबंधनात् विमोचिता। संहत्यैव राष्ट्रस्योत्थानं भवितुमर्हति। अत्र न किंचिदश्रेष्ठं हेयं वेति। विचारणीयोऽयम्। यतः-

**अल्पानामपि वस्तूनां संहतिः कार्यसाधिका।**
**तृणेर्गुणत्वभापन्नेर्वध्यन्ते मत्तदन्तिनः॥**

यथा अल्पसत्वानां तृणानां संहत्या निर्मितेन रज्वा मतो गजोऽपि बंधनमायाति, तथैव अत्यल्पसाधनयुतानां जनानामापि संहतिः फलति। विशेषरूपेण स्वपक्षीयानां आत्मीयानां स्वदेशीयानाश्च संहतिर्यत्नतः कार्या। एभ्यः विरोधात् कस्यापि कुशलं न भवति। उक्तश्च-

**संहतिः श्रेयसी पुसां स्वकुलैरल्पकैरपि।**
**तुषेणापि परित्यक्तां न प्ररोहन्ति तण्डुलाः॥**

अस्यायम्भावः यथा तुषं वाह्याच्छादकं त्वश्च त्यक्त्वा तण्डुलाः पुनरङकुरणे क्षमा न भवन्ति, तथैव स्वबन्धूननादृत्यं कोऽपि समुन्नतिं भद्रं न पश्येत्। अस्योदाहरणं रामायणे लोकविद्रावणस्य कथा विद्यते। सः स्वभ्रातुर्विभीषणस्योपदेशं कर्णं न कृतवान्, स्वपत्न्या मन्दोदर्या निवेदनं नाङ्गीकृतवान्। तस्य परिणामो सुविदित एव समग्रपौलस्त्यकुलस्य समुच्छेदोऽभवत्। महाभारते कौरवाणमपि अयमेव विपाको अभवत्। अस्माकं राष्ट्रं भारतवर्षमपि संहत्यभावात् सहस्राब्दं यावत् पारतंत्र्येऽपतत्।

अधुना भारते स्वराज्यलक्ष्मीर्विलसति सा, नूनं संस्त्या एव। स्वतंत्रतायाश्चत्वारिंशत् समाः गताः। एषु वर्षेषु वयं वैज्ञानिक क्षेत्रे अर्थिक क्षेत्रे बहुविकासं लब्धवंतः। अस्माकं विदेशनीतिः अखिलजगति प्रशंस्यते। यथापि अस्माकं कीर्तिमसमानाः केचन कापुरषाः स्वकुटिलकुचक्रेण राष्ट्रियामेकतां विनाशयितुं यतन्ते। इदानीं भारतस्य सीमासु बाह्यम् आन्तरिकश्च उपद्रवं अहैतुकैरातङ्कवादिभिः क्रियते, येन जनेषु सर्वत्राऽशान्तेः असुरक्षायाः भावना प्रबलयति, अभ्युत्थानस्य भावना च कुण्ठायते। भारतीयेषु विभिन्नमतावलम्बिषु या एकता कबीरतुलसी-नानक मुहम्मद- जायसीप्रभृतिभिः स्थापिता, सा स्वार्थपरायणैः राष्ट्रघातिभिः समुत्साद्यते। अतः तेषां कुप्रयासं विफलयितुम् पुनः संघीभूय पराक्रमस्य महतीं आवश्यकता विद्यते। यतो हि संघ एव शक्तिर्भवति नान्यत्र। यथा एकश्चणकः कस्यापि अहितं प्रतिकारं वा कर्तुं न शक्नोति, तथा एक एव पुरुषः किमपि साध्यसाधनार्थमक्षमः अत एवोक्तम्-

**'संघे शक्तिः कलि युगे'** ○○

---

- जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है वैसे-वैसे परमेश्वर के समीप होने से सब दोष, दुःख घटकर परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हो जाते हैं।
- ओ३म् धनुष है, आत्मा तीर है और ब्रह्म उसका लक्ष्य कहलाता है। इसको पूरा सावधान पुरुष ही बींध सकता है।
- चरित्रहीनता जीवन का सबसे बड़ा दोष है।
- जिस प्रकार की कामनाओं का विचार करता हुआ मनुष्य मरता है उन्हीं कामनाओं के अनुसार जन्म लेता है।

# शिक्षक दिवस : डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

जन्म दिवस
शत-शत नमन

**महान** व्यक्तित्व डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिवस को हर साल शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। वह अध्यापन पेशे के प्रति अध्याधिक समर्पित थे। ये कहा जाता है कि एक बार कुछ विद्यार्थियों द्वारा 5 सितंबर को उनका जन्मदिन मनाने के लिये उनसे आग्रह किया, इस पर उन्होंने कहा कि मेरा जन्मदिन मनाने के बजाय आप सभी को शिक्षकों के उनके महान कार्य और योगदान के लिये शिक्षकों को सम्मान देने के लिये इस दिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाना चाहिये। शिक्षक ही देश के भविष्य के वास्तविक आकृतिकार होते है अर्थात् देश का उज्जवल भविष्य विद्यार्थियों के बेहतर विकास से ही संभव है। देश में रहने वाले नागरिकों के भविष्य निर्माण के द्वारा शिक्षक राष्ट्र-निर्माण का कार्य करते है। लेकिन समाज में कोई भी शिक्षकों और उनके योगदान के बारे में नहीं सोचता था। लेकिन ये सारा श्रेय भारत के एक महान नेता डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को जाता है जिन्होंने अपने जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाने की सलाह दी। 1962 से हर वर्ष 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। शिक्षक हमें सिर्फ पढ़ाते ही नहीं है बल्कि वो हमारे व्यक्तित्व, विश्वास और कौशल स्तर को भी सुधारते हैं। वो हमें इस काबिल बनाते हैं कि हम किसी भी कठिनाई और परेशानियों का सामना कर सकें। हमें अपने जीवन में शिक्षक के द्वारा पढ़ाये गये सभी पाठ का अनुसरण करना चाहिये।

# स्वामी श्री दर्शनानन्द सरस्वती

स्मृति दिवस
11 मई, शत-शत नमन

**स्वामी** दर्शनानन्द जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन एक आदर्श सन्यासी के रूप में गुजरा। उनका परमेश्वर में अटूट विश्वास एवं दर्शन शास्त्रों के स्वाध्याय से उन्नत हुई तर्क शक्ति बड़ों-बड़ों को उनका प्रशंसक बना लेती थी। संस्मरण उन दिनों का हैं जब स्वामी जी के मस्तिष्क में ज्वालापुर में गुरुकुल खोलने का प्रण हलचल मचा रहा था। एक दिन स्वामी जी हरिद्वार की गंगनहर के किनारे खेत में बैठे हुए गाजर खा रहे थे। किसान अपने खेत से गाजर उखाड़कर, पानी से धोकर बड़े प्रेम से खिला रहा था। उसी समय एक आदमी वहां पर से घोड़े पर निकला। उसने स्वामी जी को गाजर खाते देखा तो यह अनुमान लगा लिया की यह बाबा भूखा हैं। उसने स्वामी जी से कहा बाबा गाजर खा रहे हो भूखे हो। आओ हमारे यहां आपको भरपेट भोजन मिलेगा। स्वामी जी ने उसकी बातों को ध्यान से सुनकर पहचान कर कहा तुम ही सीताराम हो, मैंने सब कुछ सुना हुआ हैं। तुम्हारे जैसे पतित आदमी के घर का भोजन खाने से तो जहर खाकर मर जाना ही अच्छा हैं। जाओ मेरे सामने से चले जाओ। स्वामी जी को आर्यजगत् हमेशा याद करता रहेगा। गुरुकुल दनकौर, सिकंदराबाद उन्हीं की देन है।

# स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

स्मृति दिवस
15 मई, शत-शत नमन

**जनमानस** को मंत्रमुग्ध करने वाले उपदेशों एवं व्याख्याओं से प्रभावित भक्तों के आग्रह पर स्वामी जी ने सर्वप्रथम 'स्वाध्याय-सर्वस्व' नामक लघु-ग्रंथ लिखा। इस लघु ग्रंथ पर पं. मोहन विद्यालंकार अमर स्वामी, स्वामी विद्यानंद विदेह की उत्साहजनक सम्मतियों ने स्वामी जी को अपने विचारों को कलमबद्ध करने के लिए प्रोत्साहित किया और मृत्युञ्जय सर्वस्व, उपनयन सर्वस्व, अग्निहोत्र सर्वस्व, उपहार सर्वस्व, दो पुटन के बीच, सत्यार्थ कल्पतरु, उद्देश्य सर्वस्व आदि अनेक ग्रंथों का प्रणयन हुआ। प्रवचन और साहित्य प्रचार का मुख्य आधार हैं, यह सोचकर वैदिक-साहित्य निर्माण में अपने नाम को सार्थक करते हुए स्वयं को दीक्षित कर दिया। उक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपने गरुवर्य के नाम से समर्पण शोध संस्थान की स्थापना की। विद्यार्थी काल से ही स्वामी जी संस्था स्थापित करने में रुचि रखते थे। अत: भटिंडा में उपदेशक विद्यालय की स्थापना कर डाली। पुन: स्वामी समर्पणानन्द जी के आदेश से गुरुकुल प्रभात आश्रम को इस प्रकार चलाया जैसा कि संस्थापक ही हों। आर्ष गुरुकुल नोएडा की नींव रखने में व अंतिम समय में अंतिम व्याख्यान व आशीर्वाद का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ। अग्निहोत्री ट्रस्ट हर वर्ष उनकी स्मृति में विशेष कार्यक्रम और विद्वानों को सम्मानित करता है। इनके द्वारा देशहित में किए गए कार्यों के लिए समस्त आर्यजगत ऋणी रहेगा।

# स्वामी श्री रामेश्वरानन्द सरस्वती

स्मृति दिवस
18 मई, शत-शत नमन

**स्वामी** रामेश्वरानन्द सरस्ती जी आर्य समाज के तेजस्वी संन्यसी थे। आप उच्चकोटि के वक्ता थे तथा उतम विद्वान व विचारक थे। 1890 मे आप का जन्म एक कृषक परिवार में हुआ। आप आरम्भ से ही मेधावी होने के साथ ही साथ विरक्त वृति के थे। आप उच्च शिक्षा न पा सके गांव में ही पाठशाला की साधारण सी शिक्षा प्राप्त की। आरम्भ से ही विरक्ति की धुन के कारण आप शीघ्र ही घर छोड़ कर चल दिए तथा काशी जा पहुंचे। यहां पर आप ने स्वामी कृष्णानन्द जी से संन्यास की दीक्षा ली। संन्यासी होने पर भी आप कुछ समय पौराणिक विचारों में रहते हुए इसका ही अनुगमन करते रहे किन्तु कुछ समय पश्चात ही आपका झुकाव आर्य समाज की ओर हुआ। आर्य समाज में प्रवेश के साथ ही आप को विद्या उपार्जन की धुन सवार हुई तथा आप गुरुकुल ज्वालापुर जा पहुंचे तथा आचार्य स्वामी शुद्ध बोध तीर्थ जी से संस्कृत व्याकरण पढ़ा। यहां से आप खुर्जा आए तथा यहां के निवास काल में दर्शन शास्त्र का अध्ययन किया। काशी में रहते हुए आप ने शास्त्रों का गहन व विस्तृत अध्ययन किया। इस प्रकार आपका अध्ययन का कार्य 21 वर्ष का रहा, जो 1935 ईश्वी में पूर्ण किया। स्वामी जी ने भारतीय स्वाधीनता संग्राम में भी खूब भाग लिया।

जन्म दिवस
28 मई, शत-शत नमन

# विनायक दामोदर वीर सावरकर

**वीर सावरकर** का जन्म 28 मई 1883 को भारत के महाराष्ट्र राज्य के नाशिक जिले के भांगुर गाव में हुआ था इनके पिता का नाम दामोदर पन्त सावरकर और माता का नाम राधाबाई था जब वीर सावरकर महज 9 साल के ही थे तो इनकी माता का हैजे की बीमारी से देहांत हो गया था और फिर माता की मृत्यु के पश्चात 7 साल बाद प्लेग जैसी भयंकर बीमारी के फैलने के कारण इनके पिता भी इस दुनिया को छोड़कर चले गये। इनका लालन पालन इनके बड़े भाई गणेश और नारायण दामोदर सावरकर तथा बहन नैनाबाई के देखरेख में हुआ। बचपन से वीर सावरकर पढ़ने-लिखने में तेज थे जिसके चलते आर्थिक तंगी के बावजूद इनके भाई ने इन्हें पढ़ने के लिए स्कूल भेजा फिर इसके पश्चात 1901 में वीर सावरकर ने शिवाजी हाईस्कूल नासिक से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण किया। बचपन से ही लिखने का शौक रखने वाले वीर सावरकर ने अपने पढ़ाई के दौरान कविताएं भी लिखना शुरू कर दिया था। इनका विवाह 1901 में यमुनाबाई के साथ हुआ जिसके बाद इनके आगे की पढाई के खर्च की जिम्मेदारी इनके ससुर ने उठाया। पढ़ाई के दौरान वीर सावरकर ने आजादी के लिए उस समय के युवा राजनेता बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चन्द्र पाल, लाला लाजपत राय जैसे नेताओं से प्रेरणा मिली। अंग्रेजों के खिलाफ देश के लिए लड़ने के कारण कालापानी की सजा मिली, जहां घोर यातनाएं दी गई पर वह अपने पथ से विचलित नहीं हुए।

# क्रांतिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा

पुण्य तिथि
31 मई, शत-शत नमन

**श्यामजी** कृष्ण वर्मा एक भारतीय क्रांतिकारी, वकील और पत्रकार थे। वो भारत माता के उन वीर सपूतों में से एक हैं जिन्होंने अपना सारा जीवन देश की आजादी के लिए समर्पित कर दिया। इंग्लैंड से पढ़ाई कर उन्होंने भारत आकर कुछ समय के लिए वकालत की और फिर कुछ राजघरानों में दीवान के तौर पर कार्य किया पर ब्रिटिश सरकार के अत्याचारों से त्रस्त होकर वो भारत से इंग्लैण्ड चले गये। वह संस्कृत समेत कई और भारतीय भाषाओं के ज्ञाता थे। उनके संस्कृत के भाषण से प्रभावित होकर मोनियर विलियम्स ने वर्माजी को ऑक्सफोर्ड में अपना सहायक बनने के लिए निमंत्रण दिया था। उन्होंने 'इंडियन होम रूल सोसाइटी', 'इंडिया हाउस' और 'द इंडियन सोसिओलोजिस्ट' की स्थापना लन्दन में की थी। इन संस्थाओं का उद्देश्य था वहां रह रहे भारतीयों को देश की आजादी के बारे में अवगत कराना और छात्रों के मध्य परस्पर मिलन एवं विविध विचार-विमर्श। श्यामजी ऐसे प्रथम भारतीय थे, जिन्हें ऑक्सफोर्ड से एम.ए. और बार-एट-ला की उपाधियां मिलीं थीं। श्यामजी कृष्ण वर्मा का जन्म 4 अक्टूबर 1857 को गुजरात के माण्डवी कस्बे में हुआ था। पिता का नाम श्रीकृष्ण वर्मा और माता का नाम गोमती बाई था। जब बालक श्यामजी मात्र 11 साल के थे तब उनकी माता का देहांत हो गया जिसके बाद उनका लालन-पालन उनकी दादी ने किया। 31 मई को जिनकी पुण्यतिथि है। इनके द्वारा देश हित में किये गये कार्यों के लिए देश इनका सदैव ऋणी रहेगा। महर्षि दयानन्द के वह मानस पुत्र थे।

# आर्यसमाज का मुख्य कार्य वेद प्रचार है

**डॉ. महेश विद्यालंकार**

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है- ऐसी धारणा और मान्यता किसी और विचारधारा वालों की नहीं है। ऋषि दयानन्द का जहां अनेक क्षेत्रों में स्मरणीय व वंदनीय योगदान है, वहां वेदों के यथार्थ व वैज्ञानिक स्वरूप को संसार के सामने रखना अपने में उनका अभूतपूर्व कार्य था। उन्होंने वेदों के सत्यस्वरूप को जीवन व जगत के साथ जोड़ा। वेद ईश्वरीय ज्ञान है, वेद स्वत: प्रमाण है, वेद सबके हैं और सबके लिए हैं, इनमें सृष्टि और मानवता का चिंतन है। ये सार्वभौमिक, सार्वकालिक, सार्वजनिक एवं सार्वदेशिक चिंतन की दृष्टि देते हैं। सृष्टि के आरम्भ में परमेश्वर ने प्राणी मात्र के कल्यार्थ वेद ज्ञान दिया।

आर्यसमाज को वेदों के पठन-पाठन, रक्षण तथा परम्परा को जीवित रखने आदि की वसीयत मिली है। इसीलिए वेदों का प्रचार-प्रसार इसका मुख्य कार्य है। उसके अतीत का इतिहास गवाह है कि वेद-परम्परा को जीवित रखने और आगे बढ़ाने के लिए न जाने कितने लोगों ने अपना तन-मन-धन न्यौछावर कर दिया। उन्हीं तपस्वियों, त्यागियों, बलिदानियों आदि का पुण्य प्रताप है, जो वेद-ज्ञान परम्परा हमें प्राप्त हुई है। इस वेद-ज्योति के ज्ञान को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए न जाने कितने विधर्मियों और आततायियों ने आक्रमण किये। फिर भी यह वेद-ज्ञान हमें आलोकित कर रहा है। इस दृष्टि से हम लोग भाग्यशाली है। दु:खद पीड़ा यह है कि आज का आर्यसमाज, सभाएं, संगठन, संस्थाएं आदि अपने मुख्य कार्य वेद-प्रचार से विमुख हो रहे हैं। यह हमारे पतन का प्रत्यक्ष प्रमाण है। वेद-प्रचार घट रहा है। गौण कार्य-स्कूल, औषधालय, बरातघर, दुकानें, मैरिज ब्यूरो आदि तेजी से बढ़ रहे हैं। इनसे समाज मंदिरों की सात्विकता, धार्मिकता एवं पवित्रता नष्ट हो रही है।

यह कार्य तो सभी कर रहे हैं। वेद प्रचार का कार्य कोई नहीं कर रहा है। इसकी जिम्मेदारी मात्र आर्यसमाज के ऊपर है। वेद-शिक्षा, वेद कथाएं, वेद सम्मेलन और वेदमंत्रों द्वारा कर्मकाण्ड और कोई नहीं कराता है। 'वेद की ज्योति जलती रहे' और कोई नारा नहीं लगाता है। वेद के आदेश, उपदेश और संदेश को जनमानस तक पहुंचाने की और कोई जिम्मेदारी नहीं समझता है। ऋषि ने इसीलिए कहा है- 'वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।' आज हम सब लोग मिलकर इस परम धर्म का गला घोंट रहे हैं। जिन समाज-मंदिरों और संस्थाओं में वेदाध्ययन-शालाएं होनी चाहिए थी वहां दुकानें और स्कूल हैं। जहां सदस्यों, अधिकारियों, पुरोहितों व उपदेशकों में धार्मिकता, नैतिकता और आध्यात्मिकता होनी चाहिए थी, वहां इनका अभाव दिख रहा है। वेद प्रचार का दर्द व बेचैनी किसी को नहीं है। सब ऊपर से नीचे तक पद-स्वार्थ, अहंकार, कुर्सीधन व सुख-सुविधाओं की दौड़ में लगे हैं। इसीलिए सर्वत्र विवाद, झगड़े, ईर्ष्या, द्वेष आदि फैल रहे हैं। ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थी व संन्यासी सभी दयानन्द और आर्यसमाज को कैश करके, अपना आश्रम, संस्था व फिक्स डिपाजिट बढ़ा रहे हैं। किसे फुर्सत है दयानन्द के दर्द की? समझा होता तो दुनिया की सर्वोत्तम विचारधारा का धनी आर्यसमाज अराजकता, अनुशासन-हीनता व भ्रष्टाचार की दुर्व्यवस्था में न होता। सत्य यह है कि संगछध्वं, मित्रस्य चक्षुषा, समानो मंत्र:, कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्, जैसे आदर्श वेद ज्ञान की हम अवहेलना व खिल्ली उड़ा रहे हैं। ऋषि दयानन्द की आत्मा हमारी करतूतों पर कलपती होगी, हमें धिक्कारती होगी, रोती होगी।

आर्यों! क्या ऋषि दयानन्द ने इसीलिए आर्यसमाज बनाया था? जो

**वेद-प्रचार की आज के जीवन व जगत् को महती आवश्यकता है। जिस वातावरण, परिस्थितियों व हालात में संसार जी रहा है, चारों ओर अंधेरा, हिंसा, मारकाट, पशुता, दु:ख, दैन्य, चिंता आदि फैल रहे हैं। हमें यदि कोई संजीवनी औषधि दे सकता है तो वह है वेद ज्ञान द्वारा दर्शित विचारधारा। आज जरूरत है आर्यसमाज को अपने को संभालने की। पदों पर बैठे हुए अधिकारीगण आत्म-मंथन करें कि हम मिशन व ऋषि के लिए क्या कर रहे हैं? नहीं कर रहे, तो पद त्याग कर दूसरों को कार्य करने का अवसर दें, तो बात बनेगी। जो सदस्य, विद्वान, उपदेशक आदि हैं, उन्हें भी आर्य समाज व वेद-प्रचार की भावना को तीव्र करना चाहिए, तभी वेद प्रचार आगे बढ़ेगा। इसी वेद प्रचार पर हमारा आर्य समाज खड़ा है। वेद-प्रचार आगे बढ़ेगा तो आर्यसमाज का प्रभाव और उपयोगिता बढ़ेगी।**

ऋषि ने हमें विचार, सिद्धांत, नियम, नैतिकता, आदर्श आदि दिये थे आज हम उनके विपरीत आचरण कर रहे हैं। हम मूल से हटते जा रहे हैं। हम इतना स्वार्थांध होते जा रहे हैं कि धार्मिक स्थानों, सभा-संगठनों व संस्थाओं में पदों के लिए लड़ रहे हैं। इन्हीं बातों और करतूतों से हमारी विचारधारा में आस्था रखने वालों की संख्या बड़ी तेजी से घट रही है। युवा पीढ़ी हमसे अलग होती जा रही है। व्यक्ति के जाते ही उस परिवार से आर्य समाज का शांति पाठ हो जाता है। हमारी संतानें हमारे क्रिया-कलापों से आर्यसमाज की धारा से नहीं जुड़ पा रही हैं। एक खतरा और तेजी से फैलता जा रहा है। आर्यसमाज के पास करोड़ों की सम्पत्ति, सभा संगठनों, संस्थाओं और समाज मंदिरों के पास है, उस पर गैर आर्यसमाजियों की गिद्ध दृष्टि बड़ी तेजी से पड़ने लगी है, जो येनकेन प्रकारेण कब्जा व अधिकार करना चाहते हैं। कर भी रहे हैं और हो भी गए हैं। ये लोग छद्म वेश में प्रवेश पा लेते हैं। फिर पदों के लिए तिकड़म करते हैं। आर्य समाज के संगठन की लड़ाई में यह भी महत्वपूर्ण है, जिसे आज हम नहीं समझ पा रहे हैं। इसके परिणाम दूरगामी होंगे। इन सब बातों तथा परिस्थितियों में आर्यसमाज को निकाल कर मुख्य उद्देश्य वेद-प्रचार पर बल देना होगा।

वेद-प्रचार की आज के जीवन व जगत् को महती आवश्यकता है। जिस वातावरण, परिस्थितियों व हालात में संसार जी रहा है, चारों ओर अंधेरा, हिंसा, मारकाट, पशुता, दुःख, दैन्य, चिंता आदि फैल रहे हैं। हमें यदि कोई संजीवनी औषधि दे सकता है तो वह है वेद ज्ञान द्वारा दर्शित विचारधारा। वेद का चिंतन हमें दुनिया में जीना सिखाता है कि हम अपने जीवन को कैसे सुखी, शांत एवं आनंदमय बनाएं और हम जो पाना चाहे पा सकें। वेद प्रचार का दायित्व आर्यसमाज के ऊपर है। उसे आत्म-निरीक्षण व आत्मशोधन करना होगा, अपने स्वरूप व कर्त्तव्य का पहचानना होगा, स्वार्थ, अहंकार तथा पद-लिप्सा से ऊपर उठना होगा और पदों की दौड़ से पीछे हटकर सदा सहयोग और प्रेम की पंक्ति में खड़ा होना होगा। कुछ काल के पश्चात् स्वत: पद को दूसरों को सौंपने की भावना लानी होगी। आर्यसमाज की आत्मा सुरक्षित रखते हुए प्रचार-प्रसार के आधुनिक साधनों को अपनाना होगा। प्रचार के लिए अपनी पत्र-पत्रिकाओं के स्तर, सामग्री व साज-सज्जा पर ध्यान देना पड़ेगा। वेद कथा तथा यज्ञ को मंदिरों की चार दीवारी से निकाल कर मुहल्लों, घरों, पार्कों व चौराहों से जोड़ना होगा। इन कार्यक्रमों में भक्ति, भजन, संगीत तथा आस्तिकता, धार्मिकता एवं प्रभुभक्ति के प्रवचनों को प्रधानता देनी होगी। यज्ञ व वेद-कथा के वातावरण में पवित्रता, सात्विकता, धार्मिकता लानी होगी। ऐसे कार्यक्रमों के अवसरों पर अधिकारी व सदस्यों को स्वदेशी वेष-भूषा अपनानी होगी। बड़ी श्रद्धा भक्ति आस्था से उपस्थित होकर दूसरों को अपने चरित्र, व्यवहार व स्वभाव से आकर्षित करना होगा।

अपने पुरोहितों, विद्वानों, संन्यासियों को आदर-सम्मान पूर्वक उच्चासन पर बैठाना होगा। उन्हें जनता के बीच बड़े अदब, कायदे व भक्ति-भावना से उतारना होगा, जिससे लोगों के मनों में उनको सुनने की उत्सुकता जिज्ञासा व आकांक्षा बढ़े। हम अपने विद्वानों को मंच पर ढंग से प्रस्तुत नहीं कर पाते हैं। सम्मानित पुरोहितों, विद्वानों, उपदेशकों और संन्यासियों को भी अपनी चारित्रिक गरिमा को आदर्श रूप में प्रस्तुत करना होगा, तभी प्रभाव स्थायी पड़ेगा।

आर्यसमाज को जलसे, जुलूस, लंगर व पिकनिकों से शक्ति तथा धन को हटाकर मुख्य काय वेद प्रचार पर ध्यान और बल देने की आवश्यकता है। हमारे पास दो ऐसे आधार हैं, जिससे हम जनता से जुड़ सकते हैं, जिनके बारे में किसी को आपत्ति नहीं है। पहले वेद, दूसर यज्ञ। आज हमने जनता से सम्पर्क करना छोड़ दिया, इसलिए जनता हमसे कट गई। यह अपने में सुपरीक्षित है कि आर्यसमाज के पास संसार को देने के लिए जैसी अपार वैचारिक सम्पदा है, वैसी अन्य किसी विचारधारा वाले के पास नहीं है। इसका चिंतन सीधा-सरल व सच्चा है। सर्वत्र, गुरुडम, पाखंड, व्यक्तिपूजा, पुजापा, चढ़ावा, प्रदर्शन आदि फैले हुए हैं। आज का व्यक्ति सत्य व यथार्थ को जानना चाहता है। यह जानकारी आर्य विचारधारा के पास ही है।

आज जरूरत है आर्यसमाज को अपने को संभालने की। पदों पर बैठे हुए अधिकारीगण आत्म-मंथन करें कि हम मिशन व ऋषि के लिए क्या कर रहे हैं? नहीं कर रहे, तो पद त्याग कर दूसरों को कार्य करने का अवसर दें, तो बात बनेगी। जो सदस्य, विद्वान, उपदेशक आदि हैं, उन्हें भी आर्य समाज व वेद-प्रचार की भावना को तीव्र करना चाहिए, तभी वेद प्रचार आगे बढ़ेगा। इसी वेद प्रचार पर हमारा आर्य समाज खड़ा है। वेद-प्रचार आगे बढ़ेगा तो आर्यसमाज का प्रभाव और उपयोगिता बढ़ेगी। OO

# यज्ञों से ऋण मुक्ति

**सरोज वर्मा (जयपुर, राजस्थान)**

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। जन्म लेते ही प्रत्येक व्यक्ति तीन ऋणों से ऋणी हो जाता है। वे ऋण हैं-देवऋण, ऋषिऋण और पितृऋण। इन्हीं से उनका जीवन चल रहा है। उन ऋणों से उऋण होना आवश्यक है। ब्राह्मणग्रन्थकार लिखते हैं- 'जायमानो ह वै पुरुषस्त्रिभि र्ऋणैर्ऋणवान् जायते।' (शत. का. १/७/२/१-५) अर्थात् प्रत्येक मनुष्य तीन प्रकार के ऋणों से ऋणी उत्पन्न होता है। ये तीन ऋण-देवऋण, पितृऋण और ऋषिऋण कहलाते हैं।

इन्हीं तीन ऋणों से उऋण होने के लिए वह यज्ञोपवीत धारण करता है। 'उपनयन संस्कार' में आचार्य द्वारा बालक को यज्ञोपवीत धारण कराया जाता है। स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती ने अपने ग्रन्थ 'उपनयन-सर्वस्व' में लिखा है-'जैसे विवाह संस्कार के बिना व्यक्ति को गृहस्थ का अधिकार नहीं होता, वैसे ही उपनयन-संस्कार के बिना व्यक्ति को विद्या, वेद, यज्ञ और ब्रह्म का अधिकार नहीं होता।' यज्ञोपवीत द्वारा ही ब्रह्मचारी को शिक्षा और यज्ञ का अधिकार 'उपनयन' के रूप में दिया जाता है। यज्ञोपवीत के तीन सूत्र उन ऋणों की स्मृति दिलाते रहते हैं और प्रेरणा देते हैं कि इन ऋणों से जीवन में मुक्त होना है। महर्षि मनु लिखते हैं- 'शास्त्र द्वारा निर्धारित विधि के अनुसार व्यक्ति (ब्रह्मचर्य-पालन एवं अध्ययन-अध्यापन से) ऋषिऋण को, (संतानोत्पत्ति तथा माता-पिता क़ी सश्रद्ध सेवा से) पितृ-ऋण का तथा (यज्ञादि के अनुष्ठान से) देव-ऋण को चुकाता है।'- (मनु.४/२५७)

महर्षि पतंजलि ने परमेश्वर के साक्षात्कार के लिए तथा भौतिक एवं सामाजिक जीवन को सामंजस्यपूर्ण बनाने के लिए पंचमहायज्ञों का विधान किया है। पंचमहायज्ञ हैं- ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ, अतिथियज्ञ और पितृयज्ञ। ब्रह्मयज्ञ का अपर नाम 'ऋषियज्ञ' है, वेदादि शास्त्रों का पढ़ना-पढ़ाना, संध्योपासना, योगाभ्यास 'ब्रह्मयज्ञ' है। विद्वानों का संग सेवा, पवित्रता, दिव्य गुणों का धारण, दातृत्व, विद्या की उन्नति और अग्निहोत्र करना 'देवयज्ञ' है।

माता-पिता आदि गुरुजनों की सेवा और हर प्रकार से उन्हें संतुष्ट रखना-प्रसन्न रखना 'पितृयज्ञ' है। अकस्मात् धार्मिक, सत्योपदेशक, सबके उपकारार्थ सर्वत्र घूमने वाला, पूर्ण विद्वान परमयोगी, संन्यासी गृहस्थ में आवे तो उसका सत्कार करना 'अतिथियज्ञ' है। किसी दु:खी भूखे प्राणी, रोगी और पशु-पक्षियों को अन्न देना 'बलिवैश्वदेव' यज्ञ है। ऋषिऋण-ज्ञान सम्पन्न आचार्यों से हमने नैमेत्तिक ज्ञान प्राप्त किया, जिनके माध्यम से ज्ञान का आदान-प्रदान हुआ, हम उन ज्ञान-प्रदाता के ऋणी हैं, यह ऋषिऋण है।

इस ऋण को ब्रह्मचर्याश्रम में ब्रह्मचर्यपूर्वक वेदाध्ययन एवं अधिकाधिक ज्ञान अर्जन कर इस ज्ञान गंगा को आगे प्रवाहित करते रहने से 'ऋषिऋण' से उऋण हो सकते हैं। इस प्रकार ब्रह्मचर्य आश्रम (शिक्षा प्राप्ति का काल) ऋषिऋण से उऋण होने का माध्यम है। मानव निर्माण में संस्कारों का विशिष्ट महत्व है। इस बात को सभी स्वीकार करते हैं कि समग्र जीवन को उन्नत बनाने के लिए सुव्यवस्थित दिनचर्या और संस्कारों से युक्त अच्छी शिक्षा का होना परम आवश्यक है परन्तु वर्तमान समय में हमारे देश में प्रचलित शिक्षा संस्कारों से विहीन है। यह केवल व्यवसाय पाने का माध्यम बन कर रह गई है। यही कारण है कि आज का विद्यार्थी ऐसी शिक्षा चाहता है जो उसे जीविकोपार्जन के योग्य बना सके।

संस्कार विहीन शिक्षा का दुष्प्रभाव भी परिलक्षित हो रहा है- हमारे देश की संस्कृति महान् है फिर भी पाश्चात्य संस्कृति को अपनाने की होड़ मची हुई है। अत: वर्तमान समय में संतानों में अच्छे संस्कारों का बीजारोपण करने का माता-पिता का दायित्व बढ़ जाता है। महर्षि दयानन्द के अनुसार दिव्य गुणों से युक्त संतान का निर्माण तभी हो सकता है जब माता-पिता स्वयं स्वस्थ, शिक्षित, सदाचारी एवं धार्मिक हों। क्योंकि माता-पिता के उपदेशों से अधिक उनके आचार-विचार और आहार-विहार का उनकी संतान पर गहरा और चिरस्थायी प्रभाव होता है।

वेद में आया है-'जो माता-पिता पूर्ण ब्रह्मचर्य से सब विद्याओं और शिक्षाओं का संग्रहित करके परस्पर प्रेम से स्वयंवर विवाह करके, ऋतुगामी होकर, विधिपूर्वक संतान उत्पन्न करते हैं, उनके वे संतान शुभगुणों से सम्पन्न होकर पितृजनों को निरंतर सुखी करते हैं।' -(यजु. १९/४८) देवऋण-जल, वायु, सूर्य आदि जड़ देव निष्काम भाव से हमारा नित्य कल्याण करते हैं। अत: इन जड़ देवों का हम पर ऋण हैं, इसे देवऋण कहते हैं।

# पर्यावरण का वैदिक समाधान

अरविन्द कुमार मेहता

मूल प्रकृति त्रिगुणात्मिकता है एवं अविकृति रूप हैं। कारणवश जब इसमें विकृति आती है तो वहीं से सृष्टि प्रक्रिया प्रारम्भ होती है। प्रकृति से सृष्टि उत्पन्न होने के रूप में, प्रथम रूप, रस, गंध स्पर्श और शब्दरूप तंत्र मात्र पैदा होते हैं और उनसे पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये मूलतत्व उत्पन्न होते हैं। ये ही तत्व समन्वित रूप से मिलकर पर्यावरण की रचना करते हैं। इन पंचतत्वों के उत्पन्न विकार विविध भौतिक विकृतियों के कारण स्वभाव व अनुपात में भिन्न होते हैं। जिससे पर्यावरण असंतुलित हो जाता है।

पर्यावरण जीवमात्र को प्रभावित करने वाली समस्त जैविक रासायनिक, भौतिक परिस्थितियों का योग है। पर्यावरण स्वयं शुद्ध हैं, किंतु प्रकृति के अनुशासन के विकृत होने पर वह प्रदूषण बढ़ता है। आज केवल भारत में ही नहीं अपितु विश्व के समक्ष पर्यावरण-प्रदूषण की समस्या विकराल रूप से आ खड़ी हुई है। आसपास का समस्त वातावरण, सुवासित वायु मंडल, अन्न, उपजाने वाली सस्य-श्यामला धरा, अंतरिक्ष का सम्पूर्ण विस्तार, सुरम्य वनस्पति सभी कुछ पूर्णतः प्रदूषित हो चुका है तथा होता जा रहा है।

शहरीकरण, औद्योगिक संस्थाओं के निर्माण से, ऑटोमोबाइल के बढ़ते प्रयोग, न्यूक्लिर पदार्थों से उत्पन्न अवशिष्ट पदार्थों की समस्या, जनसंख्या-वृद्धि, वाहनों से निकलने वाले शोर, कल-कारखानों से उठने वाला धुआं, वन-सम्पदा के विनाश से कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा में वृद्धि, खेतों में छिड़की जाने वाली कीटनाशक दवाईयों से खाद के रूप में प्रयुक्त रासायनिक मिश्रणों से, अनियोजित व अवैज्ञानिक विकास से प्रदूषण में वृद्धि हो रही है।

विश्व के कल कारखानों से निसृत धुएं से न केवल विश्व का पर्यावरण ही प्रदूषित हो रहा है, अपितु इसका घातक प्रभाव ओजोन की मोटी चादर पर पड़ रहा है। ओजोन की मोटी चादर सूर्य की परा-बैंगनी किरणों से धरती के जीवन की सुरक्षा करती है। यदि ओजोन की परत न हो अथवा पतली पड़ जाय तो धरती का सम्पूर्ण जीवन संकटमय स्थिति में आ सकता है। वैज्ञानिक अध्ययनों-परीक्षणों से ज्ञात हुआ है कि ओजोन की मोटी चादर में छिद्र हो गये हैं। विश्व में बढ़ते 'ग्रीन हाउस प्रभाव' के पीछे कार्बन डाईऑक्साइड गैस का ही हाथ है। विश्व के वायुमंडल व पर्यावरण में कार्बन डाईऑक्साइड गैसों की बढ़ती मात्रा मानवजाति के लिए विनाशकारी व प्रलयकारी सिद्ध होगी। पर्यावरणीय संतुलन को विकृत करने वाले प्रमुख प्रदूषण हैं- जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, जनसंख्या प्रदूषण, भूमि प्रदूषण, भू-ओजोन प्रदूषण, औद्योगिकरण से प्रदूषण, मृतक प्राणियों से प्रदूषण, कीटनाशी दवाईयों व उर्वरकों से प्रदूषण बृहद् रूप से मानव-जीवन व उसकी क्रियाओं को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं।

वायुप्रदूषण में वाहनों से निसृत धुआं व गैसों से विभिन्न रोग फैल रहे हैं। इसके निवारणार्थ वन-सम्पदा के

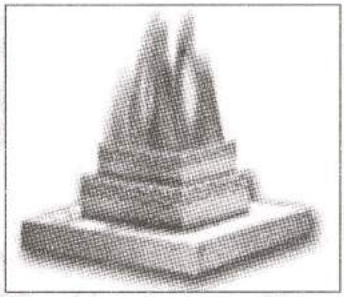

विनाश को रोका जाय, वृक्षारोपण किया जाय। वायु प्रदूषण को प्रभावहीन करने के लिए वैदिक संस्कृति के प्रमुख आयाम यज्ञ का आश्रय लेना ही निवारण का एकमात्र साधन है। वातावरण शोधन व आरोग्य प्राप्ति में यज्ञ की सुरभिमय वायु वातावरण को प्रदूषित होने से बचाती है वही उसे शुद्धता व निर्मलता भी प्रदान करती है।

अन्न व अन्नाद का संबंध ही यज्ञ है। यही क्रम जब 'यज्ञों वै श्रेष्ठतमं कर्म' के रूप में प्रतिपादित होता है तो देवताद्देश्य हवनीय द्रव्य, शुद्ध, घृत, सुरभिमय व वायुशोधक एवं रोगहर पदार्थों की अग्नि में स्वाहाकार द्वारा आहुति दी जाती है जिसे हम यज्ञ कहते हैं। यह हवि प्रदूषित वातावरण को स्वच्छ, सुगंधित वातावरण में परिणत कर देती है।

अग्निहोत्र यज्ञ द्विविध है। प्रथम वह जो धार्मिक विधि-विधानों के साथ मंत्रपूर्वक सम्पन्न होता है। द्वितीय जिसमें मंत्रपाठ न करके विशुद्ध वैज्ञानिक या चिकित्साशास्त्रीय दृष्टि से अग्नि में वायुशोधक, रोगकृमिनिवारक पदार्थों का हवन किया जाता है। आयुर्वेद के चरक, बृहन्निघण्टुरत्नाकर, योगरत्नाकर, गदनिग्रह आदि ग्रंथों में ऐसे योग वर्णित हैं जिनकी आहुति देने से राजयक्ष्मा, चेचक, ज्वर, मस्तिष्क रोगादि दूर होते हैं।

# Arya Samaj in India

## Article By Nitisha

Swami Dayananda is the founder of the Arya Samaj. He was born in 1824 in a Brahmin family. Swami Dayananda started his education at the age of five. Dayanand's father was his teacher who taught him Vedic education. He learnt Sanskrit and the rules of grammar and their application. He also studied logic, philosophy, law and ethics etc. But he was not contented with that much of knowledge.

He pondered over the problem of life and death. He became a Sadhu, wandered all over India, met a number of Sadhus and pandits and quenched his spiritual thirst. Dayananda's education was completed with his meeting with Swami Virjanand Saraswati. Swami Virjanand took a pledge from Dayananda that he (Daynanda) should devote his life to the dissemination of truth.

In those days, the British rule in India created the problems of untouchability that condemned the Shudras to a sub-human existence, child marriage, the purdah system, illiteracy and the low status of women. The heinous practice of Sati was also prevalent during the colonial rule. These problems, that branched out from the colonial oppression in India made Dayananda restless and uneasy.

Furthermore the Britishers tried to reduce India to an agricultural colony of England because their desire was that India would only produce raw materials for British factories and thereafter India would become the captive market where the machine made goods from England will be sold. Dayanand believed that it was made possible due to the prevalence of superstitions, religious diversity, multiplicity of sects, scores of religious gurus and sub-faiths each running down the other. The predominance of the Brahmin priests and their role in hindering the spread of Bhakti Movements might be attributed to the causation of India's backwardness at that time. The Brahmin priests were considered the final authority for all matters, particularly in rituals and customs and nobody could question their authority.

The householders always tried to keep the Brahmin in good humour by paying him handsomely and feeding him satisfactorily. All these were possible due to blind faith, superstition and ignorance of people in Indian society. Nevertheless such traditional belief and misrule of the Brahmins, could not keep all the Indians within its fold. Some of the Indians realized the gravity of situation and launched the Bhakti movement or propagated Sufism or Veerashaivism.

The period also witnessed the misinterpretation of religious texts, sacred books and scriptures. The meaning of the original texts were distorted and any clever pandit could add his own invention to fulfill the interest of his group in the name the 'Rishi' who was the real author of the scriptures. This plethora of problems made Dayananda realize that he must do something to reorganize the society. He preached his own vision of Hinduism. He started arguing with many religious pandits. He travelled extensively in the Northern India. He tried to form society several times. He made some short lived attempts also, once in Arrah in 1872 and the next time at Banaras in 1874. (Conti. to next education)

# सबमें एक समान

दीया माटी या स्वर्ण का
सबकी लौ, एक समान है
कुटिया में फ़कीर रहे, महलों का अमीर हो
सबमें स्वयं परम सत्ता विद्यमान है।

दलदल में कमल खिले, खिले महलों के तालाब में
पंखुड़ियों पर देखी एक जैसी मुस्कान
भिन्न-भिन्न रंग ढंग के पंछी, जिनके बड़े-छोटे पंख
पंख फैलाकर सब भरते हैं, एक जैसी उड़ान।

सुंदर-सुंदर चांद सितारे, सबके सब लगते हैं प्यारे
एक आंगन में सब सजे, कहे जिसे आसमान
सबके अंतसः में, प्रत्येक चित्त अंतर्मन में
वही सत्ता है सदा प्रकाशमान।

युग-युग से ढूंढ रहे, बहुत समीप है, पर नहीं दिखे
कैसे करें उस दिव्य की पहचान
सबमें अंतर है, जीवन-मृत्यु भी समान्तर है
लेकिन प्रकृति एक जैसी गतिमान।

वो एक है लेकिन उसकी व्याख्याएं अनेक हैं
जिसे नित्य लिखते रचते हैं विद्वान
मन के अंतर मिटे जब सबके, अंतर्मन के खुले किवाड़
दिव्य दृष्टि से देख सकें- अनंत सौंदर्य की मुस्कान।

➲ विजय गुप्त 'आशु कवि'

# देखा ना कोई दूजा, ऋषिवर महान जैसा

देखा ना कोई दूजा, ऋषिवर महान जैसा
एक ओर सारी दुनिया, एक ओर वो अकेला
कुछ पास में नहीं था, चेली ना कोई चेला
दुनिया के हर सितम को, मर्दानगी से झेला
हर दम रहा अड़ा वो, सुदृढ़ चट्टान जैसा।।

देखा ना कोई दूजा, ऋषिवर महान जैसा
देखा किसी का दुःख तो, ऋषिवर की आँख रोई
जग के लिए ऋषि ने, रातों की नींद खोई
देखे अनेक त्यागी, ऋषिराज सा न कोई
दिल था विशाल इतना, है आसमां जैसा।।

देखा ना कोई दूजा, ऋषिवर महान जैसा
हे आर्यों समाधी, मेरी नहीं बनाना
मेरे तन की राख लेकर, खेतों में गिराना
वेदों के पथ पर चलना, संसार को चलाना
बन जायें श्याम जीवन,ऋषिवर महान जैसा।।

देखा ना कोई दूजा, ऋषिवर महान जैसा।।
देखा ना कोई दूजा, ऋषिवर महान जैसा।।

➲ सोनू कुमार

# फलित ज्योतिष क्या है?

**सुरेंद्र कुमार रैली**
अध्यक्ष, पाखंड और अंधविश्वास उन्मूलन समिति, दिल्ली

ऐसा कहा जाता है कि यदि जन्म-लग्न में राहु हो और छठे स्थान में चंद्रमा हो तो बालक की मृत्यु हो जाती है। यदि जन्म लग्न में शनि हो और छठे स्थान में चंद्रमा हो तो सातवें स्थान में मंगल हो तो बालक का पिता मर जाता है।

इसी प्रकार यदि रात को बच्चा उत्पन्न होगा तो अमुक प्रकार का होगा, रविवार को होगा तो अमुक प्रकार का होगा, किसी कन्या का विवाह अमुक समय में हो गया तथा विवाह के पश्चात् शुक्रवार या श्राद्ध के दिनों में ससुराल चली जाएगी तो विधवा हो जाएगी आदि-आदि, फलित ज्योतिष सर्वथा मिथ्या है। यह भोली-भाली जनता को ठगने का पाखंड है।

आजकल फलित ज्योतिष शास्त्र का एवं टोने-टोटके आदि की व्यर्थ बातों का प्रचार विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में विज्ञापन देकर तथा टेलीविजन के अनेकों चैनलों पर जोर-शोर से हो रहा है। भारतीय संस्कृति के साथ ही नहीं बल्कि मानव जाति के साथ धोखा एवं खिलवाड़ हो रहा है। आजकल विज्ञान के नाम पर कम्प्यूटर द्वारा जन्म कुंडली बनवाने का प्रचलन अपनी चरम सीमा पर है जबकि यह विचार करना चाहिए कि कम्प्यूटर तो मनुष्य के द्वारा ही निर्माण किया गया है। उसमें जो डालोगे अर्थात् जो मैटर फीड करोगे वही तो देगा। कहने का तात्पर्य है कि चाहे ज्योतिषी सड़क छाप तोता-मैना वाला हो या कम्प्यूटर से हाल-चाल बताने वाला आधुनिक भाग्य विधाता, फलित ज्योतिष लोगों को मूर्ख बनाने की विद्या है। एक ही जन्मकुंडली आदि के आधार पर अलग-अलग ज्योतिषी अलग-अलग भविष्यवाणियां करते हैं, किसी भी ज्योतिषी द्वारा लगाए गए अनुमान कभी भी शत-प्रतिशत सही नहीं पाए गए। थोड़े अनुमान ठीक होते हैं तो ऐसा नहीं होना चाहिए। यदि फलित ज्योतिष विज्ञान होता तो उसे स्कूलों-कॉलेजों के अन्य विषयों के साथ पढ़ाया जाता। दरअसल सच्चाई तो यह है कि ज्योतिषी अपने वाक्चातुर्य से उस संतुष्टि को जाहिर करने में इतना निपुण होता है कि हर आदमी अपने विषय में जानने के लिए विज्ञान का भ्रम पैदा कर लोगों को मूर्ख बनाते रहते हैं।

आजकल फलित ज्योतिष में विभिन्न कीमती पत्थरों वाली अंगूठियां धारण करने की भी झूठी मान्यता तीव्र गति से चल रही है। अनेक लोग यह कहते सुने गए हैं कि फलां पत्थरों को अंगूठी में धारण करने से उनका जीवन ही बदल गया, अचानक लाभ होने लगा, बिगड़े कार्य बनने लगे, इत्यादि।

होता क्या है कि पत्थर को अंगूठी में धारण करने से व्यक्ति के मन में सकारात्मक दृष्टिकोण और आत्म-विश्वास जन्म लेता है। इसके बाद जो भी अच्छा कार्य होता है वह उसका श्रेय अंगूठी को देता जाता है और ज्योतिष पर उसका विश्वास पक्का हो जाता है जबकि यह केवल संयोग की ही बात होती है।

## 'विद्या दान सबसे बड़ा दान है'

आर्ष गुरुकुल, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा "आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबंध समिति (पं)" द्वारा संचालित वैदिक शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र, आर्य समाज बी-69, सेक्टर-33, नोएडा में स्थापित पिछले 26 वर्षों से ब्रह्मचारियों को विद्वान बना रहा है। जो आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में सहयोग कर रहे हैं। इस समय 100 ब्रह्मचारी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आर्ष गुरुकुल के प्रधानाचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार के नेतृत्व में दिन-रात चौगुनी उन्नति की ओर अग्रसर गुरुकुल को सहयोग देकर 'विद्या दान सबसे बड़ा दान है' में सहयोगी बनें। संस्था में निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था है। कृपया उदार हृदय से आप सहयोग 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010112345, IFSC- UTB10SCN560 में भेजकर सूचित करें ताकि आपको पावती (रसीद) भेजी जा सके। 'आर्ष गुरुकुल को दी जाने वाली राशि आयकर की धारा 80जी के अंतर्गत कर मुक्त है।' धन्यवाद!

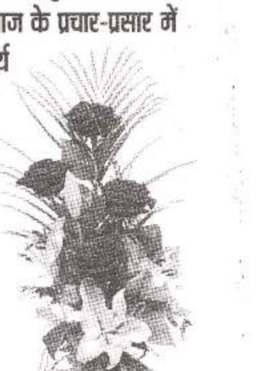

(आर्य कै. अशोक गुलाटी)
प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', मो. : 9871798221, 7011279734

# विश्ववारा संस्कृति (फार्म- 4)

| | | |
|---|---|---|
| 1. | प्रकाशन स्थान | : नोएडा |
| 2. | प्रकाशन अवधि | : मासिक |
| 3. | मुद्रक का नाम<br>(यदि विदेशी है तो मूल देश) | : वत्स ऑफसेट<br>सी ब्लॉक<br>बारातघर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा |
| 4. | प्रकाशक का नाम<br>क्या भारत का नागरिक है?<br>(यदि विदेशी हो तो मूल देश)<br>पता | : डॉ. जयेन्द्र कुमार<br>: हाँ<br><br>: आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा-201301, गौतमबुद्धनगर, उप्र, दूरभाष : 0120-2505731 |
| 5. | संपादक का नाम<br>क्या भारत का नागरिक है?<br>(यदि विदेशी हो तो मूल देश)<br>पता | : डॉ. जयेन्द्र कुमार<br>: हाँ<br><br>: आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा-201301, गौतमबुद्धनगर, उप्र, दूरभाष : 0120-2505731 |
| 6. | उन व्यक्तियों के नाम व पते समाचार-पत्र के स्वामी हो तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों | : डॉ. जयेन्द्र कुमार<br>आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा-201301, गौतमबुद्धनगर, उप्र, दूरभाष : 0120-2505731 |

मैं डॉ. जयेन्द्र कुमार एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 30-4-2019

**(डॉ. जयेन्द्र कुमार)**

# आर्यसमाज बी-69, सैक्टर-33, नोएडा का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

5 मई को आर्य समाज बी-69, सेक्टर-33 नोएडा का वार्षिक साधारण अधिवेशन आयोजित किया गया जिसमें पिछले वर्ष का वृतांत व उपलब्धियों पर मंत्री श्री जितेन्द्र सिंह द्वारा प्रकाश डाला गया। कोषाध्यक्ष श्री आर.एल. लवानिया द्वारा वर्ष 2018-19 के लिए आमदनी और खर्चा (Provisional balance sheet) पेश किया गया जिसे सभा ने पारित किया। प्रधान श्रीमती गायत्री मीना जी द्वारा समस्त सदस्यों, अधिकारियों व अन्यों का उन्हें पिछले वर्ष दिए सहयोग के लिए धन्यवाद दिया व नई कार्यकारिणी को सहयोग की बात की गई। चुनाव अधिकारी डॉ. वीरपाल विद्यालंकार की देखरेख में आर्य समाज के निम्नलिखित अधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए-

**श्री मनोहर लाल सरदाना- प्रधान, श्री आर्य.कै. अशोक गुलाटी- उपप्रधान, श्री रविन्द्र सेठ- उपप्रधान, श्रीमती आदर्श बिश्नोई- उपप्रधान, श्री विजेन्द्र कठपालिया- मंत्री, श्री परेश गुप्त- उपमंत्री, श्री रविशंकर अग्रवाल- उपमंत्री, श्री नरेन्द्र सूद- कोषाध्यक्ष,**

**महिला समाज** : श्रीमती गायत्री मीना- प्रधाना, श्रीमती मधु भसीन- मंत्री, श्रीमती संतोष लाल आर्या- कोषाध्यक्षा

**सभी अधिकारियों को हार्दिक बधाई!**

■ संपादक

# समाचार - सूचनाएं

- 17वां आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ, जिसे अनेक समाजों के सदस्यों, अधिकारियों ने अपनी उपस्थिति से गरिमा प्रदान की।

- महाशय धर्मपाल (MDH) का 96वां जन्मोत्सव 'पद्माभिषेक महोत्सव' तालकटोरा स्टेडियम में भव्यता के साथ मनाया गया। जिसमें अनेक समाजों के अधिकारी, सदस्य, संन्यासीवृंद, गुरुकुल के छात्र-छात्राएं, आचार्य व अन्य संस्थाओं, राजनेताओं द्वारा शुभकामनाएं प्रदान की गई।

- दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मंडल की ओर से राष्ट्रीय वेद सम्मेलन का आयोजन दिल्ली में भव्यता से सम्पन्न हुआ। जिसमें 38 धार्मिक विद्वानों के उद्‌बोधन हुए, जिसमें 'महर्षि दयानन्द का वेद भाष्य में सामाजिक चिंतन' एवं 'पारिवारिक जीवन की समस्याओं का वैदिक समाधान' व 'वैदिक व्यवस्था में जातिमुक्त समाज का चिंतन' एवं बच्चों में बढ़ती अपराध प्रवृति का वैदिक समाधान पर विचार-विमर्श व चिंतन किया गया।

- आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ में स्वामी आर्यमुनि दुग्धाहारी के सानिध्य में योग एवं आसन व्यायाम, प्राणायाम, स्वास्थ्य सुधार शिविर एवं ऋगवेद बृहद यज्ञ 25 से 31 मार्च तक आयोजित किया गया।

- आर्य समाज नोएडा का साधारण अधिवेशन 5 मई को आयोजित किया गया। चुनाव अधिकारी डॉ. वीरपाल विद्यालंकार की उपस्थिति में पदाधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित किए गए।

- नव संवत्सर 2076 के अवसर पर आर्य केंद्रीय सभा द्वारा कमानी ऑडीटोरियम, दिल्ली में 145वां आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर विशेष यज्ञ वैदिक विद्वानों एवं आर्य कार्यकर्ताओं को स्मृति, पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। जिसमें अध्यक्षता पद्मभूषण आर्यरत्न महाशय धर्मपाल द्वारा की गई। कार्यक्रम को कई समाजों के आर्य नेताओं, सदस्यों की उपस्थिति द्वारा सफलता प्रदान की गई। यज्ञ आर्ष गुरुकुल नोएडा के प्रधानाचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा सम्पन्न कराया गया।

- स्वामी दीक्षानन्द स्मृति दिवस-अग्निहोत्री धर्मार्थ ट्रस्ट के सौजन्य से स्वामी दीक्षानन्द स्मृति दिवस रविवार 19 मई 2019 को प्रात: 8 बजे से दोपहर 1 बजे तक वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी, देहरादून में मनाया जा रहा है। शुक्रवार 17 मई को बस यात्रा के लिए सम्पर्क करें- 9868051444.

- सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्वावधान में राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर 31 मई से 9 जून तक अजमेर में मनाया जा रहा है। सम्पर्क सूत्र- 9810702760, 9672286863.

- केंद्रीय आर्य युवती परिषद, दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में आर्य कन्या व्यक्तित्व विकास व चरित्र निर्माण शिविर, गीता भारती पब्लिक स्कूल, बी-1, ब्लॉक, अशोक बिहार, फेज-2, दिल्ली-52 (निकट- मेट्रो स्टेशन, कन्हैया नगर में 19 मई से 26 मई तक मनाया जाएगा।

- केंद्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली के तत्वावधान में डॉ. अमिता चौहान व डॉ. अशोक कु. चौहान के सानिध्य में विशाल युवक व्यक्तित्व विकास व चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन एमिटी इंटरनेशनल स्कूल, सेक्टर-44, नोएडा निकट- मैट्रो स्टेशन, बोटेनिकल गार्डन में 8 जून से 16 जून 2019 तक मनाया जाएगा।

**आर्य रत्न, महाशय धर्मपाल (MDH) पद्मभूषण सम्मान से विभूषित-भारत के राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी द्वारा भव्य समारोह में सम्मान प्रदान किया गया। तदर्थ हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।**

## शोक समाचार : विनम्र श्रद्धांजलि

- डॉ. वेद प्रताप वैदिक की धर्मपत्नी पंडिता डॉ. वेदवती वैदिक का 70 वर्ष की आयु में ४ अप्रैल को निधन हो गया था। उनकी श्रद्धांजलि सभा में अनेक समाजों के अधिकारी, सदस्य, गणमान्य-प्रतिष्ठित महानुभावों ने सम्मिलित होकर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।
- आर्यजगत के युवा भजनोपदेशक श्री कुलदीप आर्य के पिता श्री चौ. धर्मवीर आर्य का गत 14 अप्रैल को हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। उनकी शांति सभा में अनेक महानुभाव, भजनोपदेशक, संन्यासीवृंद और विद्वानों ने उपस्थिति होकर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।
- श्रीमती सावित्री छाबड़ा आर्यसमाज नोएडा की संस्थापक सदस्या, पूर्व प्रधाना, महिला समाज, वैदिक सिद्धांतों व आर्य समाज के प्रति पूर्ण समर्पित, ऋषि भक्त, यज्ञ प्रेमी, वैदिक चिंतक जी का 88 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। वह अपने पीछे एक भरा पूरा परिवार छोड़कर गई हैं। उनकी अंत्येष्टि पूर्ण वैदिक रीति से आर्ष गुरुकुल नोएडा के वैदिक विद्वान, प्रधानाचार्य, डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा की गई। श्रद्धांजलि सभा में अनेक आर्यबंधु व आर्यसमाज नोएडा के सदस्य, अधिकारी, वानप्रस्थियों द्वारा श्रद्धा-सुमन अर्पित किये गये।

# भोजन न छोड़े शरीर पर पड़ता है बुरा असर

आपका भोजन आपके शरीर के कई अंगों को सुचारू रूप से काम करने की शक्ति देता है। एक समय का खाना छोड़ने पर इन अंगों की उर्जा कम होने लगती है और उनको कार्य करने के लिए शक्ति चाहिए होती है जो की तब जब आपने भोजन नहीं किया होता है, चाहिए होता है। ऐसे में आपके अंगों पर बुरा असर पड़ना लाजमी है। शोधकर्ताओं के अनुसार खाना न खाने से आपकी डाइट और स्वास्थ्य दोनों खराब हो सकते हैं। नियमित तौर पर खाना छोड़ने से आपका वजन घटता है, तनाव का स्तर बढ़ता है और आप मानसिक तौर पर भी केंद्रित नहीं रह पाते। तब समय पर भोजन करने से आपकी शरीर की शक्ति बनी रहती है और अंगों को भी सुचारू रूप से काम करने की उर्जा प्राप्त होती रहती है।

- खाना न खाने का मानसिक तौर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है क्योंकि यह संज्ञानात्मक कार्य को कम करता है और समस्याएं बढ़ाता है
- जो व्रत रखते हैं वे भूखे नहीं रहते। वे भोजन की जगह अपने शरीर के अंगों को फल आदि या व्रत के अन्य खाद्य पदार्थों से उर्जा देते हैं
- ऐसे में व्रत से शरीर को कोई हानि नहीं होती बल्कि इससे फायदा ही होता है

## क्या-क्या खतरे हो सकते है आपके भोजन न करने से

- **भोजन छोड़ने से तनाव व अवसाद ज्यादा बढ़ता है :** शोधों से पता चलता है कि खाना न खाने से तनाव और अवसाद बढ़ता है। इससे भी अधिक डरावनी बात यह है कि आप जितनी अधिक बार खाना छोड़ेंगे आपका तनाव उतना ही अधिक बढ़ेगा और इसके कारण आपके अंदर हीन भावना व मन कुंठित होना यहां तक की आत्महत्या करने तक के विचार आ सकते हैं। इस तरह का असर बच्चों, युवाओं और गर्भवती महिलाओं में देखने को मिलता है।
- **सुबह का नाश्ता :** यदि आपको लगता है कि आप अपना एक सुबह का नाश्ता छोड़ कर अपना वजन कम कर लेंगे तो आप गलत हो सकते हैं क्योंकि आपके वजन बढ़ने की समस्या का हल सुबह का छोड़ना नहीं है। अध्ययनों से पता चलता है कि वे लोग जो नाश्ता नहीं करते उनमें मोटापे की संभावना उन लोगों की तुलना में पांच से छह गुना अधिक हो जाती है जो नाश्ता करते हैं। शोधकर्ताओं का कहना है कि किसी भी अन्य दिन का भोजन को छोड़ने पर यही प्रभाव पड़ता है।
- **मानसिक रूप से ध्यान केंद्रित नहीं होता :** खाना न खाने का मानसिक तौर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है क्योंकि यह संज्ञानात्मक कार्य को कम करता है और समस्या सुलझाने क्षमता को भी कम करता है। आपको कोई काम किसी निश्चित समय पर खत्म करना है और इसके लिए आप दोपहर का भोजन न करने का विचार करते हैं क्योंकि आप सोचते हैं कि भारी खाना खाने से आपको नींद आएगी और आपका ध्यान भटकेगा। हालांकि भोजन न करना, भारी भोजन करने से भी बदतर है क्योंकि शोधकर्ताओं ने पाया कि खाना न खाने का ध्यान केंद्रित करने पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है क्योंकि इससे संज्ञानात्मक ज्ञान कम होता है और समस्या हल करने की क्षमता भी कम हो जाती है।

# आर्यसमाज के दस नियम

सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17 पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974 Date of Dispatch 12&13 Every Month

# संगठनसूक्त

ओं संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर।।
हे प्रभो! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिए धन-वृष्टि को।।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।।
प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भांति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो।।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।
हों विचार समान सबके चित्त-मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूं बराबर भोग्य पा सब श्रेष्ठ हों।।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।
हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख-सम्पदा।।

## विश्ववारा संस्कृति

आर्य समाज, बी-69, सैक्टर-33, नोएडा (उ.प्र.) दूरभाष : 0120-2505731, 9871798221